प्रेम पत्र

पूज्य श्री जयप्रकाश नारायण जी,
सादर प्रणाम।

मुझे इस बात का बहुत खेद है कि अब फिर से देश के सब नेता कदम कुआं पटना के चक्कर काटने लगे हैं।

जो साथी कुछ ही दिन हुए बिल्कुल भूल गये थे कि पटना में भी कोई नेता रहता है, अब सोते-जागते इसी उधेड़-बुन में रहते हैं कि किस तरह आपकी ज़बान या कलम से अपने विरोधियों पर वार करवायें। वे सब इस बात का ज़रा भी ख्याल नहीं करते कि आपकी सेहत पर इस खींचातानी का क्या असर पड़ेगा।

पिछले दिनों आप से मिलने वालों में भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीवा रेड्डी साहब भी शामिल हुये। हालांकि आपने उन से लम्बी-चौड़ी बात नहीं की, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण की।

आप तो जानते ही हैं कि आपके संम्पूर्ण क्रान्ति के नारे का जनता-पार्टी के राज्य में क्या भाव रह गया है। जैसे-जैसे दूध, तेल, घी, खाना, पीना, रहना-सहना और अन्य चीजों का भाव बढ़ रहा है लेकिन आपकी सम्पूर्ण क्रान्ति का भाव घटता जा रहा है।

पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग अब ज्यादा डर भी गये हैं। इनका भी कुछ सोचना होगा।

आपकी सेवा में एक सुझाव रखना चाहता हूँ। कृपया एक दिन के लिये देहली आकर सब मिनिस्टरों को राजघाट बुलाकर दुबारा कसम खिलाइये कि वे सब छोटे बंगलों में रहा करेंगे।

आपका
चिल्ली

मुख्य पृष्ठ पर

उछल-कूद प्रतियोगिता अगर कहीं पर होय।
अखिल-विश्व में आपको जीत सके न कोय॥
जीत सके न कोय बिलकुल सच है याही।
देखके करतब आपके, दुनिया दंग है सारी॥
मत मारो छलांग, हे! दीवानों के दीवाने।
कहां गिरेगा चिल्ली यह कोई न जाने॥
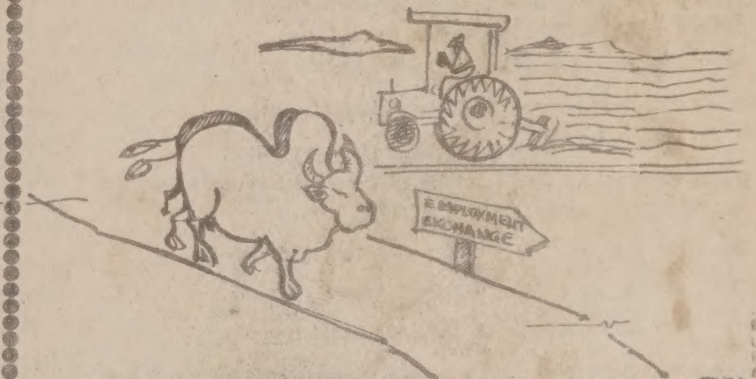
अंक : १८, २५ मई से ३१ मई १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से
निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर १५ रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —स०

नारायण शर्मा 'सोच', नाहरकटिया (असम)

प्र० : क्या आप मेरी पत्रिका का संपादन करेंगे ?

उ० : कहाँ पत्रिका आपकी, क्या है उसका नाम ?
अता पता कुछ भी नहीं, क्या बतलाएँ दाम !

भूपेन्द्र देवगुन, अन्धामुगल, दिल्ली

प्र० : आशिक के कदम कब डगमगा जाते हैं ?

उ० : जब आशिक हो दूसरा, माशूक के साथ ।
पैरों की तो क्या चली, साथ छोड़ दें हाथ ॥

केवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : जिधर देखो आबादी का समुद्र उमड़ रहा है, क्या होगा भविष्य ?

उ० : नाम 'नियोजन' का हुआ, जिस दिन से 'कल्याण' ।
बच्चे जुड़वां हो रहे, जय हो राजनारायण ॥

कैंटी अरोड़ा, शिवनगर, नई दिल्ली

प्र० : वाह किस्मत, वे भी कहते हैं बुरा,
अच्छे थे हम कल तलक जिनके लिए ।

उ० : हुक्म फांसी का सुना भुट्टो मियाँ,
मुँह से निकली थीं यही दो पंक्तियाँ ।

नरेश प्रिंस, मुजफ्फरनगर

प्र० : कोई लड़की किसी लड़के के गाल प... ...दे तो ?

उ० : बापू का सिद्धांत यह अपनाओ तत्क...
करदो उसके सामने तुरत दूसरा गाल ॥

गिरधर लाल 'बिकाणा', बीकानेर

प्र० : काकाजी, आप हमसे नाराज हैं क्या ?

उ० : नया-नया परिचय हुआ, कल देखे नहिं आज ।
फिर क्यों गिरधरलाल से होंगे हम नाराज ॥

अ. रहमान शे. आजम, रावेर (जलगाँव)

प्र० : मर्द के मरने के बाद औरत कंधा क्यों नहीं देती ?

उ० : कंधे से कंधा मिला, दिया हमेशा साथ ।
अब क्यों कंधा देय वह, छोड़ गए जब नाथ ॥

राकेश कुमार, गाँधी नगर, दिल्ली

प्र० : सुना है आप दूसरी शादी करके हनीमून मनाने चाँद पर जा रहे हैं ?

उ० : अमरीका से ही गए कागजात रिजमेंड ।
काकी ने करवा दिया कैंसिल ऐग्रीमेंट ॥

शशीपाल, घटिया अजम खाँ, आगरा

प्र० : पत्नी और प्रेमिका में क्या फर्क है काका ?

उ० : पत्नी देशी इत्र है, वह विलायती सेंट ।
टैम्परेरी प्रेमिका, पत्नी परमानेंट ॥

रमेशचन्द्र शर्मा, प्रतापगढ़ (उ. प्र.)

प्र० : काकाजी, जब मैं हाथरस में था तो एक दिन आप हम... घर आए थे, याद है ?

उ० : होली के दिन लड्डू, पपड़ी, सेब उड़ाए ।
आते क्यों नहिं, तेरी मम्मी ने बुलवाए ॥

श्रवणकुमार अग्रवाल, काठमांडू (नेपाल)

प्र० : मैं जीवन के हर पहलू से निराश हो चुका हूं, क्या करूँ...

उ० : लात मारकर तोड़ निराशा ।
तब दौड़ी आएगी आशा ॥

अशोक कुमार 'मुन्ना' भागलपुर

प्र० : अधिकतर लड़कियाँ ही भावुक होती हैं, फिर लड़के उन... पीछे क्यों भागते हैं ?

उ० : आकर्षक होता बहुत भावुकता का भाव ।
भाव जानने के लिए, लगता सबको चाव ॥

अशोक कुमार जैन, इन्दौर

प्र० : शादी के बाद इंसान अपने मित्रों को क्यों भूल जाता है ?

उ० : वाइफ से भी मित्रता करने लागे यार ।
तब छोड़े सब मित्रगण, हो करके लाचार ॥

मनमोहन लाल अग्रवाल, कानपुर

प्र० : काकाजी, आशा कहाँ तक रखनी चाहिए ?

उ० : अपनी क्षमता से अधिक आशा है बेकार ।
जितनी लंबी गूदड़ी, उतने पैर पसार ॥

श्री विनोद 'ओल्ड', पटना सिटी

प्र० : अगर दीवाना 'साप्ताहिक' निकलना हो जाए बन्द ?

उ० : तो फिर 'दैनिक' होकर चौगुना देगा आनंद !

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

अशक्ति सामन्त का

अनन्त आश्रम

बनाम—आनन्द आश्रम

पात्र परिचय

अशोक कुमार-जमींदार बाजा साहब
उत्तम कुमार-दीमक
शर्मिला टैगोर-आटा
असित सेन-बाजा साहब का नौकर
उत्पल दत्त-रचिक लाल वर्मा
राकेश रोशन-परघास
मौसमी चटर्जी-हिरण

हजम हजम चूर्ण

इन डाक्टर साहब ने गांव जाकर हमारी ग्रामीण स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत काम किया। इसके लिये मैं इनकी बहुत इज्जत करता हूं। इनको अपनी तरफ से मैं इनाम में रामायण की किताब और इलाहाबाद हाईकोर्ट जजमेन्ट की एक प्रति दूंगा।

एक प्लेट खिचड़ी भी दे देते तो अच्छा रहता।

दीमक तुम यह क्या कह रहे हो? तुम अपनी जाति का ख्याल छोड़ कर एक क्रिश्चियन लड़की से शादी करना चाहते हो? कुल की नाक कटवाओगे?

पिता जी, क्रिश्चियन लड़की से शादी करना गुनाह थोड़े ही है? फिर एक डाक्टर के लिए डाक्टरी सबसे बड़ा धर्म है। डाक्टरी के पवित्र धर्म से दुनिया की कोई ताकत मुझे डिगा नहीं सकती।

तुम कौन से डाक्टरी धर्म की बात कर रहे हो?

आटा को ज्यादा आइसक्रीम खाने के कारण जुकाम हो गया था। मैंने उसका इलाज किया। विटामिन की गोलियां खिलाईं, महंगे इंजेक्शन लगाये, अब वह कहती है कि इलाज के पैसे नहीं हैं उसके पास। फीस वसूल करना डाक्टरों का परम धर्म है। जो डाक्टर अपनी फीस छोड़ देता है, उसे सात नर्क में भी ठिकाना नहीं मिलता। अपनी फीस वसूलने के लिये ही उससे शादी करना चाहता हूं। अगर मैंने फीस छोड़ दी तो सारे डाक्टरी जगत में मेरे नाम की थू-थू होगी।

तो फीस वसूल करने के लिए ही तू आटा से शादी करना चाहता है?

तो क्या उसका बाप बहुत मालदार है ? मोटी दहेज देने को तैयार है ?

उसका बाप अगर मालदार होता तो वह फीस ही न दे देता। आटा एक अनाथ लड़की है। उसका चाचा भी होता तो मैं गर्दन दबा कर उससे पैसे वसूल करता।

फिर शादी करने का क्या मतलब ? शादी करने से तेरी फीस कैसे वसूल हो जायेगी ? वह तो उल्टे हमारे घर का माल खाने लगेगी। आटे-दाल की आजकल क्या कीमत है, तुझे पता है ?

पिता जी मैंने सारा हिसाब लगा लिया है। उसके आने से घर में भांडे मांजने वाली और झाड़ू मारने वाली की तनख्वाह बच जायेगी। धोबी धुलाई की भी बचत हो जायेगी। कुछ ही महीनों में मेरी फीस के पैसे निकल आयेंगे। रही खाने की बात-शादी के बाद से घर की दाल-सब्जी में हम मिर्चें ज्यादा डलवायेंगे। वह मिर्चें नहीं खाती, बस थोड़ा सा खाकर उठ जायेगी और खूब पानी पीकर पेट भर लेगी। खाने का ज्यादा खर्चा नहीं आयेगा।

नालायक तूने अपनी ही फीस की सोची, एक बाप के धड़कते दिल की चीख नहीं सुनी, वह दहेज की थैली देखना चाहता है ! बाप के अरमानों को कुचल कर तू उसी से शादी करेगा तो तुझे मेरे घर में कोई जगह नहीं मिलेगी।

दीमक अपने बाप की बात नहीं मानता और आटा से शादी कर लेता है तथा गांव जाकर प्रैक्टिस करने की ठान लेता है। शहर में प्रैक्टिस करने में एक अड़चन भी पैदा हो रही थी। उससे दो-तीन केस ऑपरेशन के खराब हो गये थे। बात सब जगह फैल गयी। उसे ऑपरेशन करने में उतनी ही महारत है जितनी दारासिंह को एक्टिंग करने में। दीमक और आटा दोनों गांव पहुंच जाते हैं। वहां गांव के ही व्यक्ति रचिक लाल की सहायता से अपना चिकित्सालय अनन्त आश्रम नाम से खोल लेते हैं। जब गांव में भी दीमक से कुछ केस बिगड़ने लगे तो दाढ़ी मूंछ बढ़ाने का फैसला कर लेता है ताकि आगे और केस खराब हो जाये और गांव वाले कुल्हाड़े लेकर उसे काटने आयें तो वह भाग निकले और दाढ़ी-मूंछ कटा कर उनकी पहचान में न आ सके। आटा ने नर्स के रूप में उसके काम में हाथ बटाना शुरू कर दिया।

अनन्त आश्रम

साथ हो साथ दीमक अपने पास अपनी गुप्त डायरी में आटा का हिसाब रखता जाता है। आटा के खाने-पीने पर आया खर्चा काट कर आटा के पैसे जोड़ता रहता। क्योंकि नर्स के रूप में काम करने का वह पैसा नहीं लेती थी। दो साल पूरे होते-होते डाक्टर की फीस मय सूद के वसूल हो जाती है। अब दीमक ने सोचा कि फीस वसूल करने के लिये ही उसने आटा से शादी की थी वह तो पूरा हो गया था। अब आटा उसे उल्टे खतरे के रूप में नजर आने लगी। वह उसे अच्छी तरह पहचानती थी। मौका पड़ने पर वह भाग खड़ा होता तो संभव था कि आटा गांव वालों से मिल जाती और दाढ़ी-मूंछ कटवाने पर भी उसे पहचान कर पकड़वा देती। वहीं आटा का जिन्दा रहना खतरे से खाली नहीं था। किसी तरह उसकी छुट्टी करनी होगी। आटा के एक लड़का भी पैदा हुआ। उसी दिन दीमक ने उसे बताया कि मंसूर अली खां पटौदी ने एक नुमाइशी क्रिकेट मैच में दोनों पारियों में शून्य बनाये हैं तो वह दुख के मारे चल बसती है। दीमक सुख की सांस लेता है।
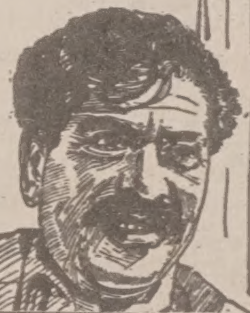
आटा से तो छुटकारा मिल गया लेकिन बच्चे का क्या होगा? गांव वालों ने उसे सलाह दी कि वह दूसरी शादी कर ले परन्तु दीमक इतनी जल्दी दूसरी शादी के लिये तैयार न था क्योंकि घर में शांति नहीं थी। आटा चुड़ैल बन कर रात को घर में उत्पात मचाया करती थी, नाना प्रकार की हरकतें करती थी।

दीमक भैया, तुम मानो तो इस बच्चे को पालने के लिए मैं ले जाता हूं। मैंने कई फिल्मों में नौकर की हैसियत से कई छोटे सरकारों को पाला है। तुमने अब तक एक-दो ही हिन्दी फिल्मों में काम किया है। 'अमानुष और बन्दी' दोनों में बच्चे का रोल नहीं है।

ठीक है काका, ले जाओ। लेकिन एक शर्त पर, वह यह कि बाबू जी को नहीं बताना कि यह उनका पोता है।

बड़े सरकार को पता लग जाये तो भैया तुम्हारा ख्याल है वह इसे भी घर से निकाल देंगे? मेरे पास भी नहीं रहने देंगे।

नहीं, वह दहेज का घाटा पूरा करने के लिए इसकी टॉफियां चुरा-चुरा कर खाना शुरू कर देंगे। बोतल से दूध भी गायब होजाने लगेगा।

उस बच्चे को एक बार रोते देख बाजा साहब की नजर उस पर पड़ती थी उन्हें उस पर बहुत प्यार आता है और वह उसे गोद लेकर पालते हैं। वही बच्चा परघास के रूप में बड़ा होता है। वह भी डाक्टर बनता है। परघास रचिक लाल की बेटी हिरण के प्रेम जाल में फंस जाता है। बाजा साहब से वह हिरण से शादी की इच्छा प्रकट करता है। गोद लिए बेटे को भी उल्टा जाता देख बाजा साहब को सदमा लगता है।

परघास, तुम भी अपनी मर्जी से गैरजाति में विवाह करोगे ? मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी, तुम्हें पता है मैंने अपने सगे बेटे को इसी कारण घर से निकाल दिया था।

पिता जी, मैं मजबूर हूं! मैं शादी करूंगा तो हिरण से ही। मेरा जाति पांति पर कोई विश्वास नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतर्राजातीय विवाह करने पर शायद सरकार इस फिल्म को मनोरंजनकर से मुक्त कर दे।

जुबली पर मुफ्त खाने पीने को मिलेगा।

बाबू जी, आप परघास और हिरण की शादी में सम्मिलित हुए और इनको आशीर्वाद भी दिया! आपका अचानक इतना बड़ा हृदय परिवर्तन कैसे हो गया ?

मैं बाप हूँ, मेरा धर्म केवल दहेज लेना है। मुझे इससे सरोकार नहीं कि यह कौन ले आता है कौन नहीं! जाति वगैरह की बातें तो केवल अड़चन डालने के लिये हैं। अगर बेटा अपनी मर्जी से शादी करने की जिद पकड़े तो इन दोनों ने मुझे दहेज के रूप में यह वचन दिया है कि परघास को उम्र भर जो कमाई सरकारी कर्मचारियों की बिमारी के झूठे डाक्टरी सर्टि-फिकेट जारी करने पर होगी वह मुझे देता रहेगा। दहेज की रकम से भी ज्यादा मिलने की आशा है मुझे। मैं तुझे माफ करने को तैयार हूं अगर तू अब तक गांव वालों से लूटे पैसे जुर्माने के रूप में मुझे दे दे तो ?

दे दो भैया द दो।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

गोपाल सिंहल—फतहनगर : मैं मलेरिया का रोगी हूं। क्या डॉक्टर झटका मेरा इलाज कर देंगे ?

उ० : अवश्य कर देंगे। और हमें विश्वास है कि मलेरिया से आपकी मृत्यु नहीं होगी। हां, उनका बिल देखने के बाद न मरने की जिम्मेदारी आपकी अपनी होगी।

अरुण पासवान—भीस्तीपारा : चाचा जी, हंसने के लिए तो हम दीवाना पत्रिका पढ़ते हैं, रोने के लिए क्या करें ?

उ० : आप क्यों कष्ट करते हैं। रोने का काम आप उन पर छोड़ दें जो दीवाना की नकल करते-करते तंग आ गये हैं।

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा : मैंने आपस की बातें स्तम्भ में कई प्रश्न भेजे पर आपने कुछ को छोड़ कर अन्य के उत्तर नहीं दिए। क्या भारत की सर्वप्रिय हास्य पत्रिका दीवाना के लिए 'एडवांस' में प्रश्न भेजने पड़ते हैं ?

उ० : ऐसी तो कोई शर्त नहीं है। पर प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक होती है कि हम एक पाठक के भेजे सभी प्रश्नों के उत्तर दें तो हमें एक दीवाना पत्रिका रोज प्रकाशित करनी पड़े और उसमें प्रश्नों के उत्तर के अतिरिक्त और कुछ न हो। आशा है हमारे सभी पाठक हमारी इस मजबूरी के लिए हमें क्षमा करेंगे।

हर्षवर्धन—नई दिल्ली : घर की परिस्थिति ऐसी नहीं है कि मैं डॉक्टर बन सकूं फिर भी मैं डॉक्टर बनना चाहता हूं। बताइये क्या करूं ?

उ० : उम्मीद का दामन हाथ से मत छोड़िये, कोई न कोई रास्ता निकल आएगा।

बलविन्द्र कुमार सोठी—करनाल : आपकी महफिल के बारे में मैं एक तजुर्बे की बात कहना चाहता हूं ?

यहां हर एक को जी खोल के पिलवाई जाती है,
सुराही हम तक आती है, तो खाली पाई जाती है।

उ० : गलत बात कही है आपने हमारी दीवानी महफिल के बारे में।

ये महफिल है जहां कोई खास और ना आम होता है,
जो बढ़कर थाम ले सागर उसी का जाम होता है।

तेज प्रसाद बैसी, 'तेज'—दुलियाजान : डीयर अंकल, पिछले दिनों आपने कहा था कि अब सब जगह दीवाना समय अनुसार पहुंचा करेगा। किन्तु दुलियाजान में दीवाना अब भी देर से पहुंच रहा है, जिसके कारण हम किसी भी प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकते। लगता है आपने भी नेताओं की तरह झूठे वादे करने शुरू कर दिए हैं।

उ० : पर इतना अन्तर अवश्य है हममें और नेताओं में कि हमें अपने वादे पर शर्म आती है। वैसे हम अपनी मजबूरियां गिनवायें तो आप सुनते-सुनते थक जाएंगे। हमारी भरपूर कोशिश यही है कि दीवाना अपने प्रेमियों तक समय पर पहुंचे और अपने वादे के लिए हमें यह न कहना पड़े।

वो वादा ही क्या जो वफा हो गया,
बस इतना न समझा खफा हो गया।

सुरेश और अशरफ—मुंगेर : यदि संसार में मूर्खों का राज हो जाए तो वे हमारे साथ कैसा सलूक करें ?

उ० : वैसा ही जैसा बादशाह बादशाहों के साथ करते हैं। तब आप मूर्खों की दुकानों पर लिखा देखें, 'मोती महल का तन्दूरी आदमी।' और, 'यहां ताजा आदमी के सीखी कबाब मिलते हैं।'

परमिन्दर सिंह पिकम—अमृतसर : लगता है आप जनता पार्टी से नफरत करते हैं। क्या आपने कांग्रेस को वोट दिया था ?

उ० : वोट चाहे किसी को भी दिया हो, पर हम जनता पार्टी से नफरत नहीं करते। केवल सच्ची बात कहते हैं। जब हम 'दो दुनी पांच' और 'तीन दुनी सात' कहें तभी आप समझेंगे कि हम जनता पार्टी का समर्थन करते हैं ?

रमेश तुलाराम सावदेकर—जवलाबु : मैं चोर, डाकू, लुटेरा नहीं हूं, फिर भी मुझे पुलिस की पगड़ी से ही चिढ़ क्यों है ?

उ० : हो सकता है आप 'चोर' या पगड़ी में से जो बनना चाहते हो वह न बन पाए हों।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी, 'ऊषा'—विक्रमगंज : आपको अपने गंजेपन का अहसास कब होता है ?

उ० : जब हम अपने बढ़े हुए नाखून देखते हैं और किसी दूसरे का सर हमारे हाथ नहीं आता।

रोशन व्यास 'त्यागी'—इन्दौर : प्यार करने से क्या फायदा है ?

उ० : जिससे प्यार किया जाए वह अगर अपनी जेब में हाथ डालने दे तो नुकसान भी क्या है ?

शब्बीर मुंड़ा—परतापुर : मैंने आपके नाम से लाटरी का टिकट लिया है। इनाम निकले तो क्या करूं ? कोई गर्मागर्म तरीका बताइये।

उ० : आप गर्मागर्म की बात कर रहे हैं। हमें तो इस बात पर रोना आ रहा है कि आपके पैसे ठंडे हो गये। हमारा नाम लेकर कोई तीतर भूने तो वह तंदूर में से निकल कर उड़ जाता है। और हमारे नाम पर फ्राई की हुई मछली पानी में छलांग लगा कर तैरने लगती है।

कूपन
आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बीलहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

बन्द करो बकवास

बम्बई शहर की तुझको मैं सैर करा दूंऽऽ।

बन्द करो बकवास, जेल तो ले ही जा रहे हो ! मुझे शहर में घुमा कर बदनाम भी करोगे क्या ?
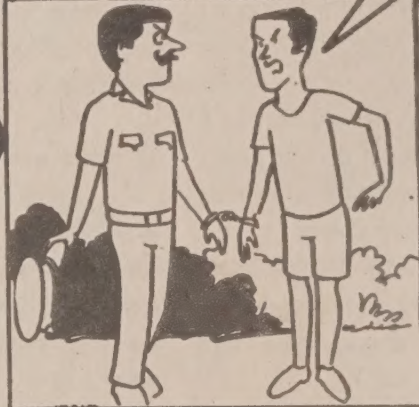
जारे कारे बदरा बलम के पास, वो हैं ऐसे बुद्धू न समझें रे प्यार ।

बन्द करो बकवास, प्यार समझाने के और भी तरीके हैं 'खां खां खां।

मैं न भूलूंगाऽऽऽ

बन्द करो बकवास, स्टेपनी तो भूल आए अब क्या होगा ?

'अरे''तुमसे कहा था जरा ठहर जाओ''लेकिन मुंह उठाए चली आ रही हो।'

'मुंह झुका के आ रही हूं—उठा के आती तो रुक न जाती।'

'क्या तुम्हें जोर की आवाज सुनाई नहीं देती ?'

'कोई ऊंचा बोले तो ऊंचा सुनती हूं।'

'लड़की परात लिए ऊपर पहुंच गई''' उसने अपना चेहरा घूंघट से ढक रखा था। दलजीत ने पलट कर देखा और उसे पहचानने का प्रयत्न करने लगा—फिर उसकी आंखें लड़की के गोरे-गोरे कोमल पैरों पर ठहर गई। दलजीत का दिल एकाएक जोर से धड़का'''यह लड़की किसी मजदूर परिवार की तो हो नहीं सकती'''और फिर उसकी आवाज'''!'

दलजीत नीचे उतरने की बजाए वहीं रुका खड़ा रह गया। जब वह खाली परात को लेकर लौटी तो दलजीत ने बड़े ध्यान से उसे देखा। वह लड़की पहले ही डंडे पर उतर कर रुक गई और दलजीत की ओर मुंह करके बोली—

'ऐसे टुकर-टुकर क्या देखते हैं जी''' कुछ लोक लाज का ही ख्याल कीजिए।'

दलजीत हड़बड़ा कर जल्दी से संभलता हुआ बोला—

'ओह'''क्षमा करना'''।'

'क्षमा करने की क्या बात है—माल तो आप ही का है।'

'क्या बकती हो ?' दलजीत गुस्से से बोला।

लड़की ने बड़ी अदब से घूंघट हटा दिया। दलजीत बुरी तरह उछल पड़ा और पीछे हटता हुआ बोला—

'त'''त'''तुम''।'

'जी''आपकी दासी !'

'म'''म'''मैं कहता हूं'''तुम यहां कैसे ?'

'जैसे आप—वैसे मैं—।'

'क्या बकवास है ?'

'बकवास नहीं सरकार—जहां पति वहीं पत्नी।'

'मैं पूछता हूं आप यहां क्या करने आई हैं ?'

दलजीत गुस्से से बोला।

'मजदूरी करने'''।'

'दिमाग खराब हो गया है आपका ?'

'लीजिए'''जब दिमाग ठीक हो गया है तो कहते हैं दिमाग खराब हो गया है।'

'मैं पूछता हूं आपको यहां मजदूरी करने की क्या जरूरत पड़ी है ?'

'इसलिए कि हमारी सास की आंखों का ऑपरेशन जल्दी होना है और इसके लिए अधिक पैसा चाहिए'''पहले यहां हमारे पति सोलह रुपये दिन कमाते थे''अब इतने ही हम भी कमायेंगे''बत्तीस रुपये प्रतिदिन मिलेंगे तो ऑपरेशन जल्दी हो जायेगा।'

'बकवास बन्द कीजिए'''मुझे आपके रुपयों की जरूरत नहीं।'

'आपको नहीं—हमारी सास को जरूरत है।'

'मैं अपनी मां के ऑपरेशन में आपका एक धेला भी नहीं लूंगा।'

'ले लीजिए सरकार'''यह रुपया हमारे डैडी की करोड़ों वाली दौलत का थोड़े ही होगा'''यह तो हमारे अपने परिश्रम की कमाई है'''जो हम अपने पति के घर रहकर कर रहे हैं।'

'मैं कहता हूं आप यहां से चली जाइए''' वरना'''।'

'वरना क्या ?'

'या तो शाम को आप घर जाएंगी या मैं जाऊंगा।'

'ऐ लीजे''हम और कहां जायेंगे''हमारा तो एक ही घर है''औरत जो ठहरे'''आप मर्द हैं आप तो कहीं फुटपाथ पर रह कर रात गुजार देंगे'''लेकिन हम फुटपाथ पर रात गुजारेंगे तो कल सुबह आप ही के मुंह पर कालिख मली होगी।'

'बकवास बन्द कीजिए''मैं ही घर नहीं आऊंगा।'

'हम तो बकवास बन्द कर देंगे''लेकिन सरकार घर नहीं पहुंचेंगे तो मां का ब्लड प्रेशर हाई हो जायेगा''हम उन्हें क्या जवाब देंगे।'

'ओह''' दलजीत होंठ भींच कर बोला, 'ठीक है''आप कुछ भी कीजिए''मैं अभी-अभी यहां से छलांग लगा कर प्राण दे रहा हूं।'

दलजीत नीचे कूदने ही लगा था कि मोनिका जल्दी से उसका दामन थाम कर बोली—

'आं हां''हां''आप क्यों कष्ट करते हैं सरकार—आप यूं करेंगे तो आपकी बहन के भविष्य और मां के बुढ़ापे का क्या होगा ठहरिए''यह शुभ काम हम ही किए देते हैं''

कहते-कहते मोनिका ने परात नीचे फेंक कर सचमुच ही छलांग लगा दी''दलजीत ने बड़ी फुर्ती से पीछे से उसकी ओढ़नी पकड़ ली जिससे वह वहीं लटक गई''अगर वह उसे इतनी जल्दी पकड़ न लेता तो शायद मोनिका इस समय खून में नहाई होती। दलजीत हांप कर उसे ऊपर खींचने का प्रयत्न करने लगा था''चारों ओर से मजदूर लोग दौड़ पड़े थे। नीचे सुपरवाईजर आकर चीखने लगा था''मोनिका अपने आपको गिराने के लिये जोर लगाती हुई कह रही थी''

'छोड़ दीजिये ना''हमें गिरने दीजिए।'

'पागल हो गई हैं आप''गिर कर जिन्दा बचेंगी !'

'तो जिन्दा रहना ही कौन चाहता है।'

'मैं कहता हूं जल्दी से ऊपर आ जाइये।'

'एक शर्त पर''शाम को आप घर आयेंगे।'

'आऊंगा''बाबा आऊंगा''।' दलजीत दांत किचकिचाकर बोला।

मोनिका की बांछें खिल गईं। दलजीत की सहायता से वह ऊपर पहुंची और दलजीत से लिपट गई''क्षण-भर के लिए दलजीत ने भी उसे भींच लिया''किन्तु दूसरे ही क्षण

झटके से उसे अलग कर दिया मजदूर और सुपरवाईजर पास आ गये थे—

'क्या हो गया था ? क्या बात थी ?' एक ने पूछा।

'कैसे गिर गईं ?' सुपरवाईजर ने मोनिका को देख कर पूछा।

'जरा पैर फिसल गया था···।'

'अरे—देख कर नहीं उतर रही थीं—अगर गिरतीं तो मर जातीं।'

'इन्हें देखती उतर रही थी।' मोनिका ने शरमा कर दलजीत की ओर संकेत किया।

'हाय···इस मजदूर में क्या खास बात है ?

'वही जो पति देवता में होती है।'

'अच्छा···तो यह तेरा पति है ?'

'अरे तो क्या···और किसका इतना सौभाग्य हो सकता है कि मेरे जैसा सुन्दर पति हो उसका।'

'यह तो सच है—तेरा पति सचमुच सुन्दर है।'

दलजीत जल्दी-जल्दी परात लेकर नीचे उतरने लगा और मजदूर ठहाके लगाने लगे।

दलजीत खाने की पोटली लेकर एक पेड़ के नीचे जा बैठा···कुछ देर बाद मोनिका भी वहाँ आ गई और अपनी पोटली खोल कर बैठने लगी तो दलजीत एक झटके से उठ गया और दूसरे पेड़ के नीचे जा बैठा···मोनिका भी उठ कर वहीं पहुंच गई। दलजीत झुंझला कर बोला—

'क्यों पीछे पड़ गई हो मेरे ?'

'और किसके पीछे पड़ूं सरकार—यह बता दीजिये।'

'मैं कहता हूं चली जाओ यहाँ से।'

कहाँ चली जाऊं···'

'भाड़ में जाओ···।'

'मैं तो जा रही थी···आप ही ने रोक लिया।'

'तुम मुझे खाने नहीं दोगी ?

'आप भी खाइये···मैं भी खाऊंगी।'

'तुम किसी और जगह बैठ कर नहीं खा सकती।'

'हाय राम···आपके होते हुए मैं किसी और जगह जाकर पेट भरूंगी।'

दलजीत होंठ भींचे उसे घूरता रहा···फिर गुस्से से बोला—

'ठीक है—मैं खाना ही नहीं खाता···

वह पोटली पटक कर एक ओर जाने लगा तो मोनिका जोर से चिल्लाई—

'अरे भाइयों···बहनों···जरा सुनो···देखो तो मेरा पति मुझ से रूठ कर जा रहा है।'

चारों ओर से मजदूर औरतों और मर्दों ने दलजीत को घेर लिया। दलजीत बौखला गया—किसी ने पूछा—

'क्यों जी···क्यों खफ़ा हो गए थे पत्नी से ?'

'अरे भैया···इतनी सुन्दर पत्नी तो किसी भाग्यवान को मिलती है।'

'आखिर बात क्या है भैया ?'

'ब···ब···बात तो कुछ नहीं है···' दलजीत बौखला कर बोला।

'ए लो···भाइयों, बहनों' मोनिका बोली, 'बात भी कुछ नहीं और मुझसे रूठ कर भी जा रहे हैं।'

'वैसे ही मजाक कर रहे होंगे।'

'तो फिर पकड़ो इन्हें···हम जरा मना लें।'

कुछ मजदूरों ने दलजीत को पकड़ लिया और मोनिका रोटी के ग्रास बना कर बलपूर्वक उसके मुँह में ठूंसती रही···लोग ठहाके लगा रहे थे।

दलजीत खाये तो जा रहा था किन्तु उसकी आँखों में खून उतरा हुआ था।

दलजीत सोने के लिये लेटा मोनिका जल्दी से पर्दा हटा कर अन्दर आ गई। दलजीत गुस्से से हड़बड़ा कर उठने लगा तो मोनिका ने झट होंठों पर उंगली रख ली और झुक कर धीमे स्वर में कहा—

'माँ जाग रही हैं अभी···

दलजीत झटके से लेट गया और उसने मोनिका की ओर पीठ कर ली। मोनिका ने उसकी पिंडलियों पर हाथ रखा तो दलजीत ने उसका हाथ झटक दिया। मोनिका बिदक कर बड़बड़ाई—

'माई गाड—करंट मारती हैं यह तो।'

दलजीत आँखें और मुँह बन्द किये पड़ा रहा। मोनिका ने अचानक झपट कर कसके उसकी पिंडलियां पकड़ लीं और दबाने लगी। दलजीत ने झटके से छुड़ाने का प्रयत्न किया तो मोनिका ने कहा—

'माँ जाग रही हैं—क्यों नखरे करते हैं ?'

दलजीत क्रोध की अधिकता से होंठ भींच कर रह गया और मोनिका धीरे-धीरे उसकी पिंडलियां दबाती रही···धीरे-धीरे दलजीत का क्रोध घटता गया और उसकी आंखें नींद से बोझिल होती गईं···मोनिका की उंगलियों के स्पर्श से उसके बदन में एक लावा-सा दौड़ाने लगा था—

फिर उसके मस्तिष्क में मोनिका का पूरा व्यक्तित्व उभरने लगा···एक घमंडी बददिमाग लड़की जिसने पहली ही भेंट में उसे खरीदने का प्रयत्न किया था—वह बिका नहीं और मोनिका उससे बदला लेने के लिये क्या-क्या कुछ करती रही···अखबार खरीदा, उसकी खोली खाली करवाई, नौकरी नहीं करने दी, झूठा अपराध लगा कर हवालात

में बन्द करवाया और…और प्रोफेसर उपाध्याय का खून तक करवा दिया…

और फिर…फिर यह मोनिका…इसे क्या सूझी जो इसने मुझ से शादी की…क्यों इसने मुझ शादी के लिए पसन्द किया—और फिर अपना घर, ऐश, आराम छोड़ कर मेरे यहां चली आई…मेरे साथ मजदूरी करने लगी…और आज तो उसने अपने प्राण लेने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी…किस के लिए…?

दलजीत ने झुरझुरी-सी ली। उसे ऐसे लगा जैसे मोनिका सचमुच उसकी पत्नी बन कर रहना चाहती है…शायद सचमुच अब वह एक पति के तौर पर मुझसे प्यार करने लगी है…दलजीत के मन में एक गुदगुदी-सी होने लगी…मोनिका के कोमल हाथों का स्पर्श उसे बड़ा भला लग रहा था—.

लेकिन फिर एकाएक उसके मस्तिष्क में जैसे बम फटा हो…उसके कानों में मोनिका का वह वाक्य गूंजने लगा जो उसने अदालत में कहा—

'मैं दलजीत के बच्चे की माँ बनने वाली हूं।'

'माँ—माँ—।'

दलजीत का मस्तिष्क सनसनाने लगा—

'यह झूठ है…सरासर झूठ है—।'

'इसके पेट में मेरा बच्चा नहीं है।'

'इसने झूठ का सहारा लेकर मुझसे शादी की है।'

'यह पति-पत्नी का प्यार नहीं एक ड्रामा है।'

'इसकी कोख में न जाने किसका पाप है जो यह मेरे सिर मढ़ना चाहती है—।'

'नहीं-नहीं—यह नहीं हो सकता।'

'मैं इसे अपनी पत्नी नहीं मान सकता।

'मैं इससे घृणा करता हूं—।'

दलजीत ने सख्ती से होंठ भींच लिये और सोने का प्रयास करने लगा—उसके दिमाग में सनसनाहट-सी गूंज रही थी और गुस्से का लावा सारे बदन में दौड़ता फिर रहा था।

मोनिका पगार में गारा भर कर सीढ़ियों की ओर बढ़ रही थी कि अचानक एक कार उसके पास आकर रुकी और उसमें से बिल्डिंग के मालिक सेठ केदारनाथ और उनकी बेटी उमा उतरे। मोनिका को देखते ही उमा आश्चर्य से बोली—

'अरे मोनिका—तुम

मोनिका जल्दी से…हड़बड़ाकर उमा के पास आ गई।

'उमा'…तुम यहां?'

'तुम्हें मैंने पार्टी में बताया था ना कि तुम्हारे पति दलजीत कुमार सक्सेना मेरे ही डैडी की बिल्डिंग पर मजदूर हैं।'

'तो जहां मेरे पति मजदूरी कर रहे हैं…वहीं मैं भी मजदूरी कर रही हूं।'

'मजदूरी—' उमा ने ठहाका लगाया, 'भला तुम्हें मजदूरी की क्या जरूरत थी…? एक करोड़पति बाप की बेटी और मजदूरी—।'

'नहीं उमा…अब मैं करोड़पति बाप की बेटी नहीं हूं…आठ रुपये रोज के मजदूर की पत्नी हूं—यहीं काम करती हूं मैं भी।'

'अच्छा…।' उमा ने व्यंग से हंस कर कहा, 'तुम अपने पति के लिए सीरियस कब से हुई?'

'यह तुम क्या कह रही हो उमा…अपने पति के लिए सीरियस कौन पत्नी नहीं होगी?'

'कमाल है भई…दलजीत कुमार सक्सेना वही तो है जिसे तुमने प्रोफेसर उपाध्याय को बदनाम करने के लिए खरीदने का प्रयत्न किया था…वह नहीं माना तो तुमने उसे अखबार के दफ्तर से ही निकलवा दिया।'

'यह झूठ है—मैंने उसे नहीं निकलवाया था।'

'तुमने उसे बेघर कराया था।'

'यह भी झूठ है।'

'तुम कुछ भी कहो लेकिन मेरी समझ में नहीं आ सकता कि तुम अपने पति के लिए इतनी सीरियस हो सकती हो—और पति भी कौन जिस पर झूठा आरोप लगा कर तुमने उससे बलपूर्वक शादी की।'

'उमा…!' मोनिका की आवाज गुस्से से कांप उठी।

'मोनिका! ऐसा कौन-सा भेद है जो छुपा रह सके…हमें सब मालूम है कि तुमने अदालत में दलजीत पर क्या दोष लगाया था—तुम किसी का पाप दलजीत पर थोप रही हो—शायद अपने डैडी की इज्जत बचाने के लिए तुमने इतना बड़ा नाटक रचा है।'

'उमा…' मोनिका गुस्से से चिल्लाई, 'बकवास बन्द करो।'

'ओह…मैंने सच्ची बात कह दी तो बिगड़ गई…मैं तो कहती हूं कि दलजीत से बढ़ कर और कौन गधा होगा जिसने अब तक तुम्हें अपने गले लटका रखा है।

'क्या?' मोनिका होंठ भींचकर कांपती हुई बोली, 'तुमने मेरे पति को गधा कहा।'

'मैं क्या…उसे हर कोई गधा कहेगा।'

मोनिका ने झपट कर उमा का मुंह नोच लिया…और उमा मोनिका से लिपट पड़ी—

'अरे-अरे…केदारनाथ घबरा कर बोले, 'यह क्या पागलपन है—तुम सहेलियां होकर लड़ रही हो—अरे हटो…अलग हटो।'

लेकिन वह अलग नहीं हुईं—चारों ओर से मजदूर उधर दौड़ पड़े…दलजीत पहले से ही उनके पास था—उसने उनकी पूरी बात चीत सुनी थी…लेकिन उसमें इतना साहस नहीं था कि वह दोनों को अलग कर सकता।

मोनिका ने उमा को पटक दिया था और उसके बालों को झंझोड़ कर कह रही थी—

'तू मेरे पति को गाली देती है…मैं तेरा खून पी जाऊंगी।'

'मैं…मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगी…तूने आदमियों में मुझे बेइज्जत किया।'

फिर उमा ने जोर से पलटनी खाई और मोनिका दूर जा गिरी…दूसरे ही क्षण उमा ने एक ईंट उठा कर पूरे बल से मोनिका के सिर पर दे मारी। मोनिका के गले से एक जोरदार चीख निकली और वह अपना सिर थाम कर लड़खड़ा कर बैठ गई। उमा ने दूसरी ईंट उठा कर मारने के लिए हाथ उठाया तो दलजीत ने पीछे से झपट कर उसका हाथ पकड़ लिया—

'क्या करती हैं आप—क्या मार ही डालेंगी?'

'नहीं— केदारनाथ पास आकर बोले, 'यह तुमने क्या किया? अरे वह लड़की तुम्हारी दुश्मन है क्या?…है तो सहेली ही।'

उमा जोर से हांफ रही थी—मोनिका के सिर से लहू बह-बह कर रेत में मिल रहा था…और सेठ केदारनाथ चीख-चीख कर कह रहे थे…

'अरे कोई जल्दी से एम्बूलेंस के लिए फोन करो।'

एक सुपरवाईजर दौड़ कर एम्बूलेंस के लिए फोन करने चला गया।

शेष पृष्ठ ४० पर

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि पिलपिल-सिलबिल अपनी जासूसी सेवा गांवों तक पहुंचाने के एक विचार से ट्रेलर खरीद कर चलता-फिरता जासूसी दफ्तर बना कर गांवों की ओर चल देते हैं। पहले ही गांव में उन्हें बताया जाता है कि गांव के बाहर भूत वाले पेड़ के पास रात को कई रोज से एक उड़न तश्तरी उतरती है और कुछ देर बाद उड़ जाती है। गांव वाले डर के मारे रात को बाहर ही नहीं निकलते हैं। पिलपिल-सिलबिल इस बात की खोज करके तथ्य सामने लाने का (बगैर कत्थे का) बीड़ा उठाते हैं। पहली रात को दूर से ही खुद जाग कर उन्होंने यह देखने का फैसला किया कि उड़न तश्तरी जैसी चीज रात को सचमुच ही उतरती है या गांव वालों की कल्पना है। ग्यारह बजे से ही वह टकटकी लगाये बैठे थे। ठीक बारह बजे घर्राहट की आवाज आई और……

दूसरे ग्रह का आदमी म्हारे कब्जे में आ भी गया तो क्या होगा? उसके पास हमें देने के लिए बीड़ी-सिगरेट तक नहीं होगी। उसे देखने के लिए लोग जो म्हारे घर आयेंगे वह हमारी खाटें और कुर्सियां तोड़ जायेंगे। थम किस चांदी की बात कर रिये हो?

देख्या, मेरी कितनी बेसती खराब हुई गांव में। जब मैंने लोगों को वह सब बताया तो उन्होंने जो किया उसे देख मेरा कलेजा मुँह को आ गया।
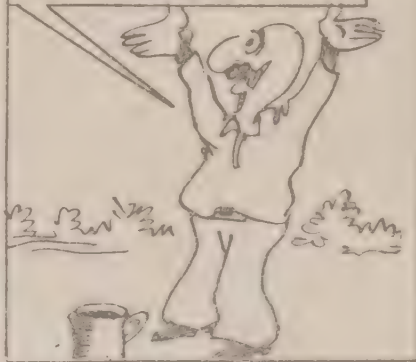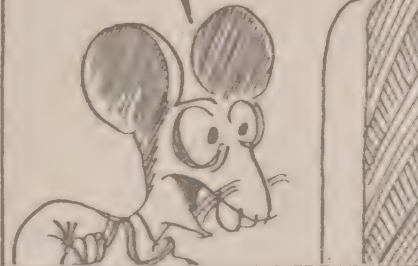
हम ऐन मौके पर आन पहुंचे हैं। उड़न तश्तरी उतर रही है। अपनी आंखें फाड़-फाड़ कर देखते रहो इसमें से किस तरह के नमूने बाहर निकलेंगे।
हनुमान चालीसा की किताब लाना भूल गिया मैं
ये हमको फाड़ के थोड़े ही खा जायेंगे।
इनकी किस्मत मा थारा राशन खाना होगा तो जरूर खायेंगे।
यही सोच के तो मुझे झुरझुरी आ रही है
अपने ऊपर नमक और मसाला मुर्गा छाप छिडक ले।
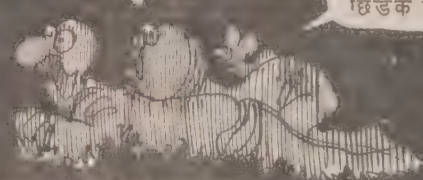
खेत में उतरते ही वह उड़न तश्तरी अजीब रूप में परिवर्तित हो जाती है
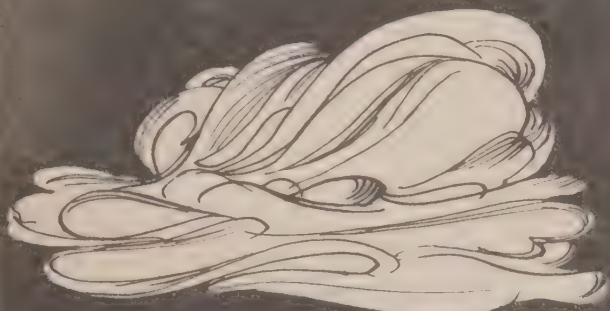
और कुछ देर के बाद उसमें से धुंधले से बुलबुले उठने शुरू होते हैं। एक लम्बा-सा बुलबुला सीधा पिलपिल-सिलबिल को टार्च का प्रकाश फेंकने को कहता है।

टार्च जलने पर
अरे यो कैसा जानवर है ? हवामेंभी उड़ कर आ रिया है यही है दूसरे ग्रहका मानव ?
अच्छा भाई लोगों, थम इससे मिल कर हालचाल पूछना और गपशप मारना मैं बिल में छुपने जा रिया हूं। मुझे जरूरी काम याद आ गिया है।
तुम घबराना मत ट्रेंक्वीलाइजर गन चला रहा हूं।

बाकी अगले अंक में

रंगीन दीवाना का अंक नं० १२ मिला, बहुत पसन्द आया। पिलपिल-सिलबिल तो अपने पाठकों को दिल खोलकर हँसाते हैं। अन्य स्तम्भ परोपकारी, चिल्ली लीला, फैंटम, छुट्टन और मिट्ठन व उनका साथी झमूरा ने भी हँसा-हँसा कर आंखों में आंसू ला दिये।

किशोर नारंग 'प्रेमी'—इन्दौर

दीवाना का रंग-बिरंगा अंक नं० १२ पढ़ा। मुख पृष्ठ पर चिल्ली का शरीर तो रंग बिरंगा और कपड़े कोरे (साफ) थे। वाह चिल्ली क्या चालबाज है। कुछ भी है, चिल्ली अपनी भिन्न-भिन्न हरकतों से अपने पाठकों को हंसाता रहता है।

अन्दर के पृष्ठों में—काका के दमदार कारतूस व चिल्ली की अनोखी लीला अपने आपमें हमेशा ही अनोखी होती है। मोटू-पतलू व पिलपिल सिलबिल किसी से कम नहीं थे! दीवाना फीचर 'इन्हें भी मौका दीजिए' आपका ख्याल १००% सही है। मौका तो सभी को देना चाहिए।

दिनेश भटाई 'राजा'—इन्दौर

दीवाना के नये अंक के मुख पृष्ठ पर चिल्ली का सतरंगा चेहरा देखकर हम हंसते हंसते दीवाना हो गए। इस अंक की सारी सामग्री यों तो विशेष आकर्षित करने वाली थी पर 'मोटू-पतलू' चित्र कथा के निर्देशक भारद्वाज जी की कहानी ने बेहद प्रभावित किया। 'बच्चा झमूरा' की कहानी पर काफी तरस आया। दीवाना को अब हास्य की सर्व श्रेष्ठ पत्रिका कहना कोई गलत नहीं होगा क्योंकि यही एक ऐसी पत्रिका हो जो हास्य के साथ-साथ ज्ञान और फिल्मी कलाकारों से भी परिचित करती है। दीवाना यूं ही तरक्की करती रहे यही हमारी तमन्ना है।

एस० मन्जूर हुसन कादरी—बीकानेर

दीवाना [illegible] अंक १३ मिला। मुख [illegible] का फव्वारा छूट पड़ा। [illegible]सतार पर सिलबिल, पिलपिल का भाषण लाजवाब था। और मोटू, पतलू, चिल्ली लीला, आपस की बातें काफी हास्यपूर्ण थीं। इसे किस्मत ही समझिये जब'''ने तो हंसाते हंसाते पेट में दर्द कर दिया। फिल्म परोडी 'दुनियादारी' काफी चटपटी थी। आगामी अंक की इन्तजार में—

अनिल कुमार—गुलाटी

आज ही अपनी प्रिय पत्रिका दीवाना का अंक नं० १३ प्राप्त हुआ। मोटू-पतलू, पिलपिल सिलबिल, व धारावाहिक उपन्यास 'मोनिका' विशेष रूप से अच्छे लगे। आज कल दीवाना बहुत देरी से मिल रहा है। क्या कारण है? दीवाना के अब पृष्ठ बढ़ाने का कष्ट करें चाहे इसका मूल्य भी बढ़ा दो।

विपिन कुमार—माडल टाउन, देहली

एक बार मेरे दोस्त ने १ अप्रैल को एक डिब्बे में कुछ रखकर भेजा और लिखा कि इसमें हंसी का खजाना है। मैंने खोला तो उसमें दीवाना का अंक नं० १३ निकला तो हंसी के मारे बुरा हाल हो गया। चिल्ली लीला बोर रही। बाकी सभी फीचर अच्छे रहे। खासतौर पर किस्मत ही समझिए जब व मोटू पतलू। फिल्मी पैरोडी शुरू करके तो आपने दीवाना में चार चांद लगा दिये।

सोनु कंबरा—सिरसा

मैं 'दीवाना' का एक बहुत ही पुराना पाठक हूं! हर अंक की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से करता रहता हूं। प्यारा-प्यारा अंक १३ प्राप्त हुआ। इस अंक में चिल्ली लीला, मोटू, पतलू एवं पिलपिल-सिलबिल ने काफी हंसाया! फिल्म पैरोडी पढ़कर तो दिल झूम उठा! कुल मिलाकर यह अंक बहुत रोचक रहा! हमारी शुभकामनायें स्वीकार करें। **सुरेश कुमार शर्मा—मुंगेर**

आप मानें या न मानें मैंने आज तक किसी पत्रिका का इन्तजार नहीं किया पर मैं दीवाना का इन्तजार करता हूं। मैं जितना इन्तजार करता हूं दीवाना उतना ही ज्यादा पसंद आता है। दीवाना का नया अंक मिला उसमें मुझे सबसे ज्यादा 'फिल्म पैरोडी' दुनियादारी ज्यादा पसन्द आई। उसके अलावा 'मोटू-पतलू' 'छुट्टन-मिट्ठन' इसे किस्मत ही समझिये जब,' 'सवाल यह है कि इस सप्ताह अधिक लाजवाब था। अब इसके बिना भी मजा नहीं आता।

खत्री टीकमदास जेठानन्द—उल्हासनगर

दीवाना का अंक नं० १२ प्राप्त हुआ। चिल्ली को रंगों में रंगा देखकर तो मैं भी हंसी से रंग गया। चिल्ली लीला देखी तो और भी प्रसन्नता हुई। परोपकारी बहुत बढ़िया लगा। धारावाहिक उपन्यास 'मोनिका' बहुत रोचकतापूर्ण चल रहा है। फिल्मी समाचारों ने तो बोर किया। किन्तु हंसी तब आई जब मोटू पतलू में चेला राम के जासूसी कारनामे पढ़े। अब दीवाना बहुत रोचक होता जा रहा है।

श्याम बिहारी अग्रवाल—काशीपुर

मैंने आज दीवाना का नया अंक नं० १३ प्राप्त कर ही लिया और उसके बाद मैं इतना प्रसन्न हुआ कि जैसे किसी भूखे को रोटी मिल जाय। दीवाना को जब मैं पढ़ने बैठा तो तब तक न उठा जब तक कि पूरा दीवाना न खत्म हो गया। इस अंक में खास करके चाचा बातूनी, काका के कारतूस, मोटू पतलू, छुट्टन मिट्ठन, फैंटम, पिलपिल सिलबिल, ने खूब हंसाया। फिल्म परौडी दुनियादारी बनाम दुनियादारी और धारावाहिक उपन्यास मोनिका बहुत अच्छी रही। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि दीवाना दिन दूनी रात चौगनी प्रगति करे। अगले अंक की इन्तजार में—

तेहसीनुद्दीन—जाफराबाद

आज लम्बी प्रतीक्षा के बाद दीवाना का अंक १३ मिला। यह अंक हमें १० अप्रैल के दिन प्राप्त हुआ। दीवाना का मुख पृष्ठ देखा तो हंसी के फव्वारे छूट गये। चिल्ली लीला, फिल्म परोडी, दुनियादारी बनाम दुनियादारी, परोपकारी, आपस की बातें, पंचतंत्र सिलबिल पिलपिल बेहद पसन्द आए। दांतों वाले चूहे का तो जवाब ही नहीं। मेरी पहले यह आदत थी कि मैं चेलाराम की चोटियां काटकर संभालना था। अब यह दांतों वाले खरगोश ने टोपी पहननी शुरू कर दी इसलिए अपना धंधा तो चौपट हो गया है। छुट्टन मिट्ठन, सवाल यह है, फैंटम, मदहोश, इसे किस्मत ही समझिये जब व इनकी भी लगे नुमाइश, बेहद पसन्द आए।

परमिन्दर सिंह, पिकम—अमृतसर

पिछले दिनों मोटू, पतलू, चेलाराम और घसीटाराम डाकुओं के चंगुल में फंस गये थे। वहां से चेलाराम तो बच कर निकल भागा था, पर मोटू, पतलू और घसीटा राम को डाकुओं ने एक खाई में फेंक दिया था। वहां घसीटा राम अब एक रस्सी में फंसा हुआ गहरी खाई में लटक रहा है, मोटू, पतलू के लिये चट्टान से ऊपर चढ़ने या नीचे उतरने का कोई रास्ता नहीं है और डाकुओं का घोड़ा चेलाराम को फिर डाकुओं के ठिकाने पर ले आया है। इसके बाद का आँखों देखा हाल आगे प्रस्तुत है।

ऐसे लकड़ी हिला रहे हो, जैसे तुम कोई कटी हुई पतंग लूट रहे हो। मैं इतना भारी हूं, तुम्हारी लकड़ी में फंस कर ऊपर कैसे आऊंगा।

लकड़ी मार-मार कर तुमने रस्सी काट दी है, मैं खाई में गिर कर मर गया तो तुम्हें कच्चा चबा जाऊंगा।

रस्सी टूटने वाली है इसकी जान बचा।

ऊपर से गिर कर मुर्गी के अंडे की तरह पटाखा बज जायेगा तुम्हारा फिर अपना ही आमलेट बना कर खाना।

रस्सी का बस एक बल टूटना बाकी था कि गिद्ध ने घसीटा राम को अपनी चोंच में पकड़ लिया।

यह गिर कर मरा नहीं है और इसे खाने के लिये गिद्ध पहले ही आ गया है।
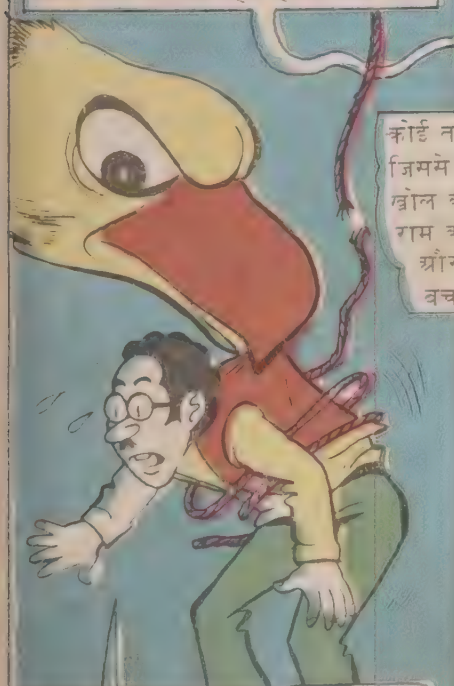
कोई तरकीब सोचो! जिससे गिद्ध चोंच खोल कर घसीटा राम को छोड़ दे और इसकी जान बच जाये?

रस्सी टूट गई क्या? अरे मैं जिन्दा हूं या मर गया हूं?

अरे मेरा बेड़ा गर्क हो गया! मुंह फाड़े क्या देख रहे हो? इस गिद्ध को समझा नहीं सकते यदि मुझे गुस्सा आ गया तो मैं इसके पर नोंच लूंगा।

हम अंडे की बात कर रहे थे, तो समझो अब वास्तव में घसीटा राम का आमलेट बना कर खा जायेगा गिद्ध ।
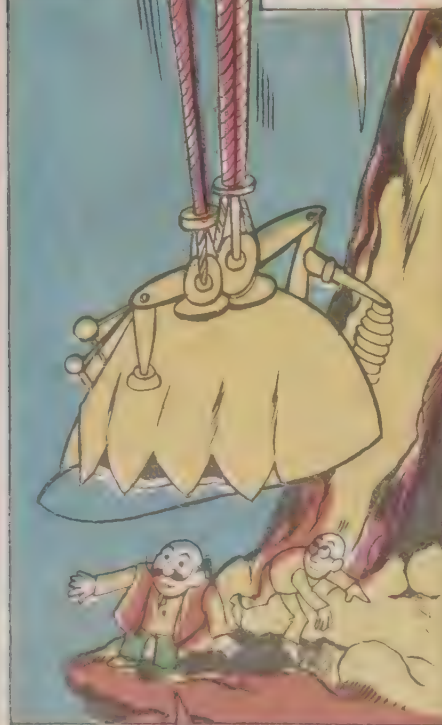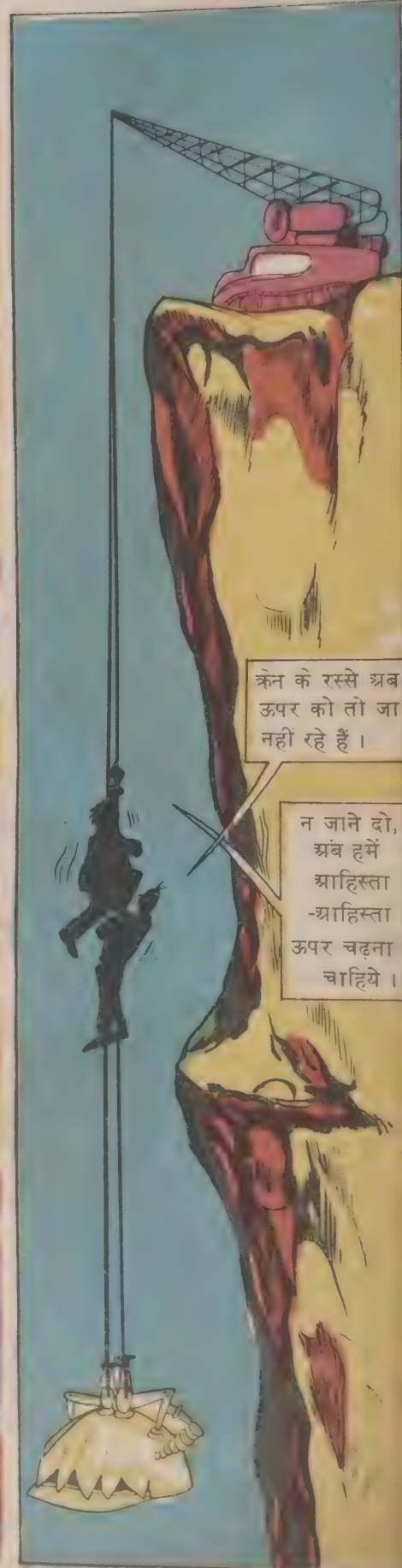
मेरे तो हाथ टूट गये हैं और नहीं चढा जाता मुझसे ।
हाथ टूट जाने दे, हिम्मत मत तोड़ ।

दूसरी ओर पास खड़े एक डाकू ने चेलाराम को देख लिया था ।
अब बच कर कहां जाओगे बच्चू ?

पर इससे पहले कि डाकू गोली चला पाता, चेलाराम ने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया ।
क्या बात है भाई ? बहुत गुस्सा आ रहा है तो दो रोटी फालतू खा लेना ।
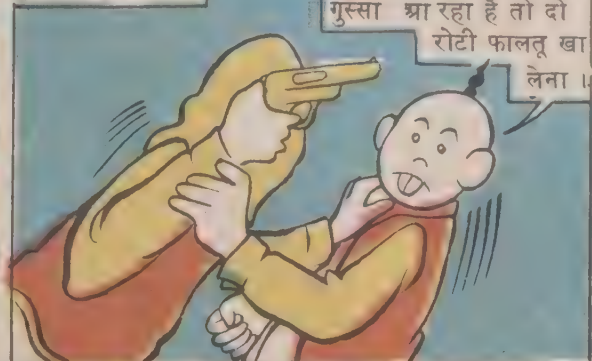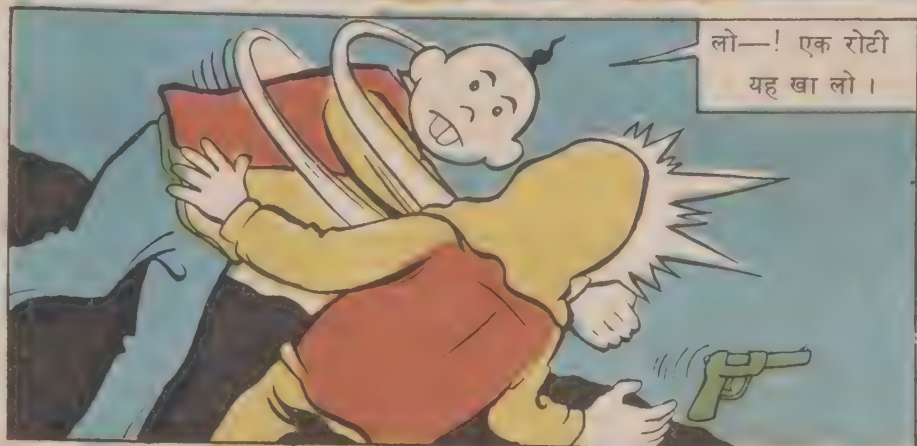
लो—! एक रोटी यह खा लो ।
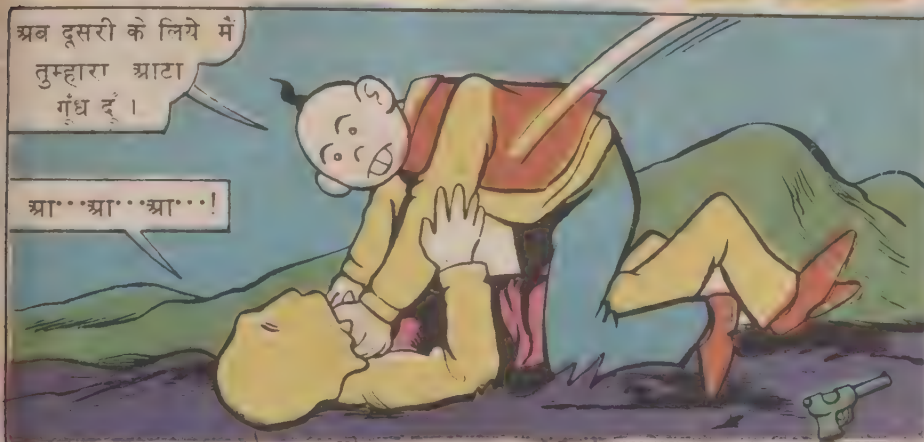
अब दूसरी के लिये मैं तुम्हारा आटा गूंध दूं ।
आ···आ···आ···!
बेहोश हो गया ! अगर जरा सा टेंटवा और दबा देता तो इसकी कहानी समाप्त थी ।
इस लड़ाई का दृश्य दूर से बाकी डाकुओं ने भी देख लिया था
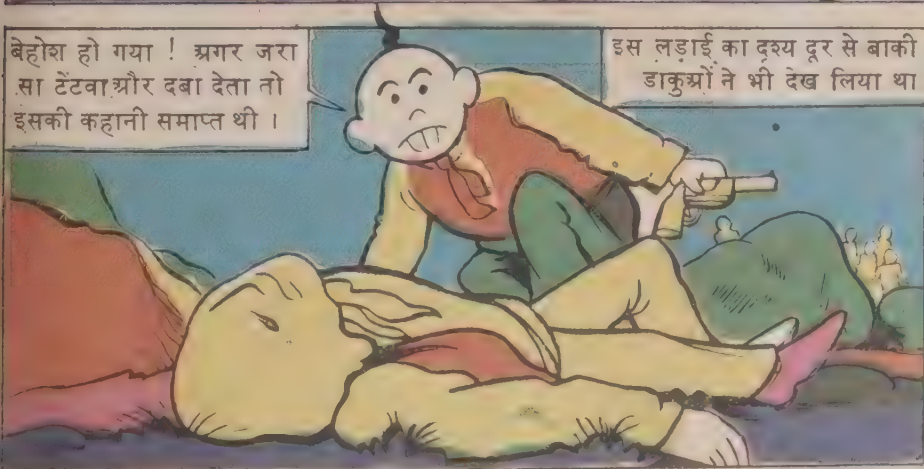
मैंने साफ-साफ देखा है, वहां हमारे पहरेदार से कोई लड़ रहा था ।
वही चूहा है, पुलिस का जासूस, जो हमारा घोड़ा लेकर भागा था ।
चलो, उसकी खाल में भुस भर दो ।

अरे, सब डाकू मेरे पीछे पड़े हैं, इतने डाकुओं का मुकाबला मैं अकेला कैसे करूंगा ?
पिस्तौल की रेंज से बहुत दूर है, यहां से गोली नहीं लगेगी। भाग कर पकड़ लो कर्नल की दुम को।

जान बचाने के लिये चेलाराम पास खड़ी एक क्रेन में घुस गया।
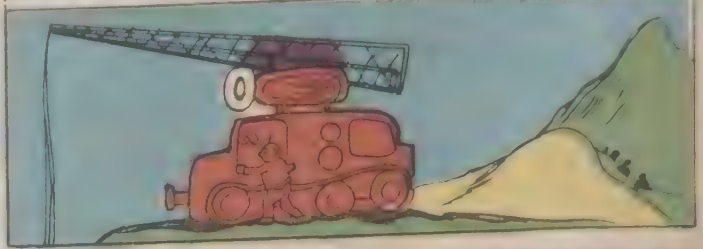
क्या करूं ? क्या इस क्रेन को दौड़ा कर यहां से भाग जाऊं ? पर मुझे तो क्रेन चलानी ही नहीं आती।

घबराहट में चेलाराम ने। क्रेन का एक बटन दवा दिया। बटन दबते ही क्रेन के लोहे के रस्से तेजी से ऊपर खिचने लगे।

रस्से बहुत तेजी से ऊपर जा रहे हैं।
ऊपर पहुंचते ही पहाड़ पर छलांग लगा देना नहीं तो रस्सों के साथ ही चर्खी पर लिपट जाओगे।

मोटू-पतलू जैसे ही क्रेन की चोटी तक पहुंचे उन्होंने नीचे छलांग लगा दी।
मर जाते अभी कितनी तेजी से रस्सा लपेटा है, क्रेन के ड्राइवर को कम्बल में लपेट कर इसकी धुनाई करेंगे।

मोटू-पतलू अभी मुश्किल से धरती पर खड़े ही हो पाये थे कि वहां डाकू आ गये।
वाह रे ऊपर वाले ! एक मौत से बचाया तो दूसरी भेज दी।
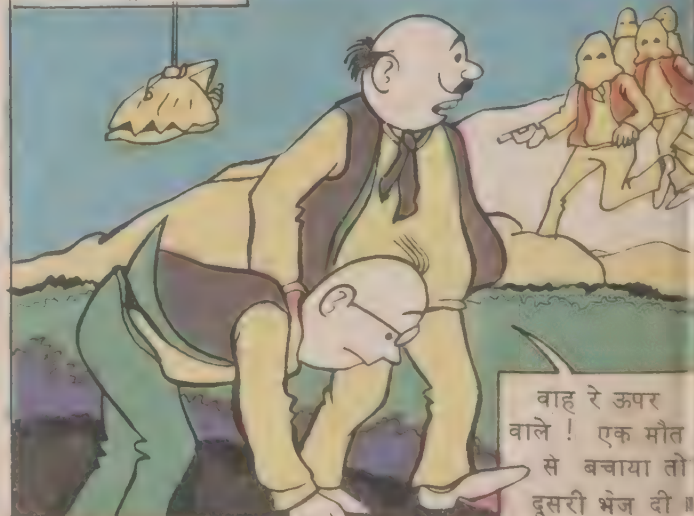
क्यों भाई साहब ! क्या ग्रापने किसी लम्बे दांतों वाले ग्रादमी को इधर ग्राते देखा है ?
वह जिसके सर पर चूहे जैसी दुम है ?
हां, वही ।
उधर गया है, उस ग्रोर !

चलो उधर चलो ।
दौड़ो, ग्रौर तेज दौड़ो ।
जान बचानी है तो इस क्रेन में छुप जाग्रो जल्दी से ।

बात सुनो सरदार ! यह दोनों तो वही थे जिन्हें हमने अंधी गुफा में धकेला था ।
ग्ररे हाँ ! वही थे, पर वे जिन्दा कैसे बच गये । ग्रवश्य उनके भूत होंगे ।

ग्रब तक चेलाराम को क्रेन के कंट्रोल स्विच समझ में ग्रा गये थे । मौका पाते ही उसने एक स्विच दबाया···
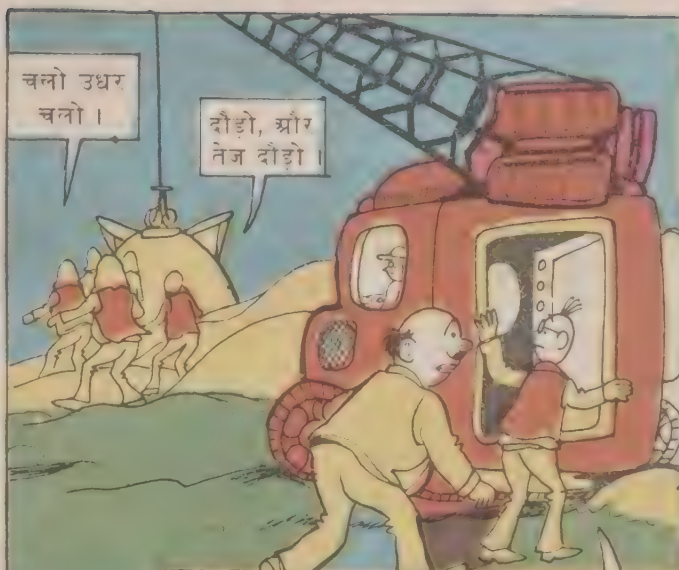
···तो क्रेन ने सभी डाकुग्रों को समेट कर ग्रपना मुंह बन्द कर लिया, ग्रौर क्रेन तेजी से ऊपर उठने लगी ।
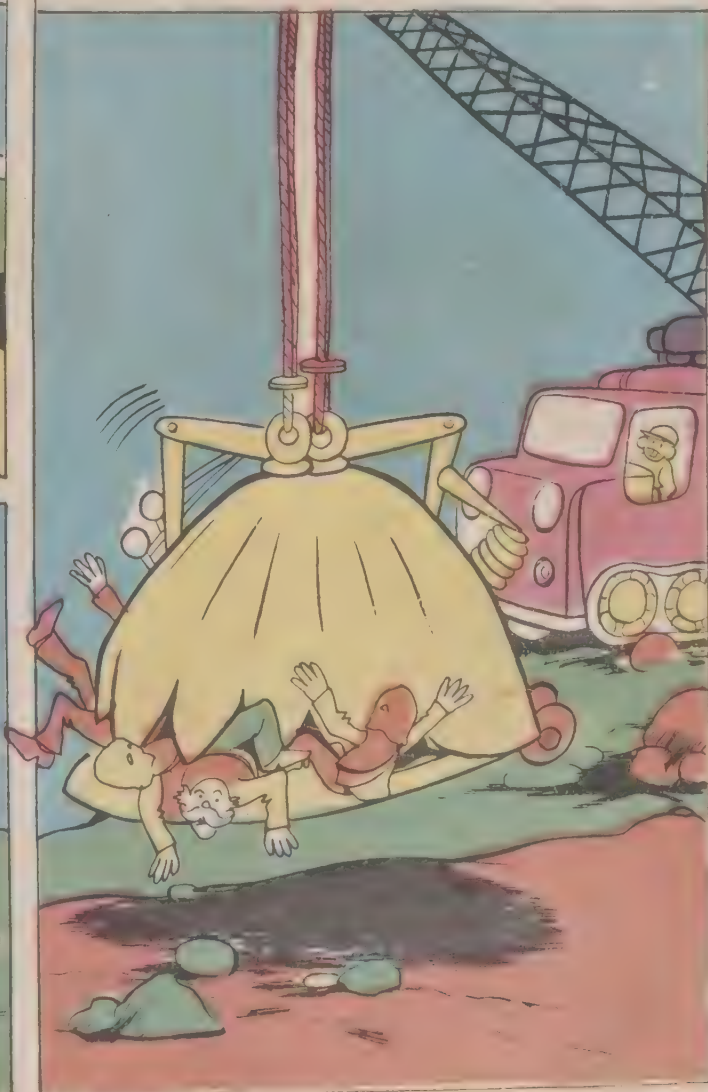
उधर क्रेन के अन्दर मोटू-पतलू अपनी अलग ही खिचड़ी पका रहे थे ।
यह है वह क्रेन ड्राइवर, जिसने तार जल्दी-जल्दी खींच कर हमारी जान लेने की कोशिश की थी ।
लोहे का यह डंडा मारकर सर फोड़ दे इसका ।

अरे मर गया ।
धड़ाम
इस खुशी में मिठाई बांट ।
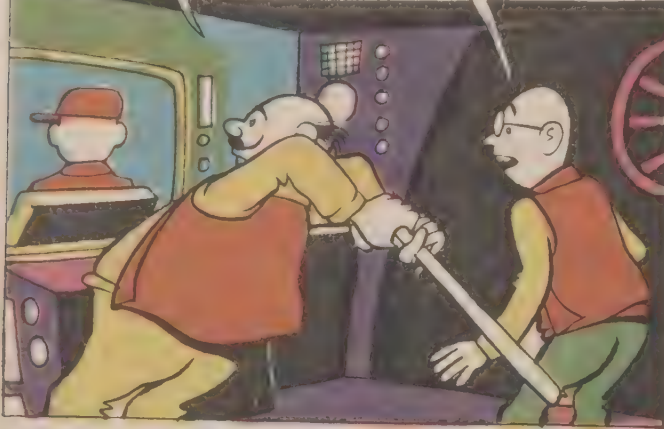
अरे यह तो अपना चेलाराम है ।
जिस हांडी को वह डाकू फोड़ना चाहते थे वह हमने फोड़ दी ।
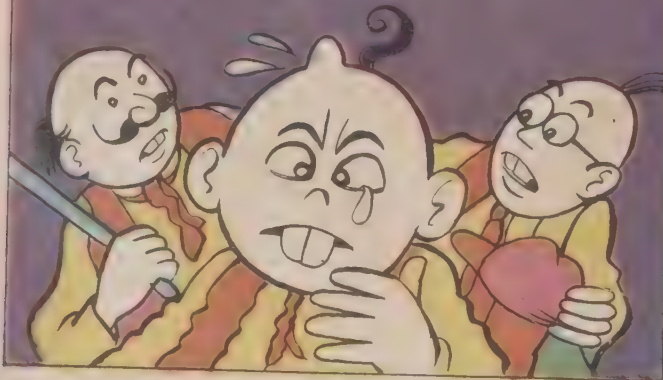
तभी बाहर शोर हुआ……!
अरे वह देखो क्रेन के अन्दर डाकू
हम लंच पर गये थे, किसी ने इन्हें हमारे पीछे से पकड़ लिया ।
कैम्प जाकर पुलिस को फोन करो ।
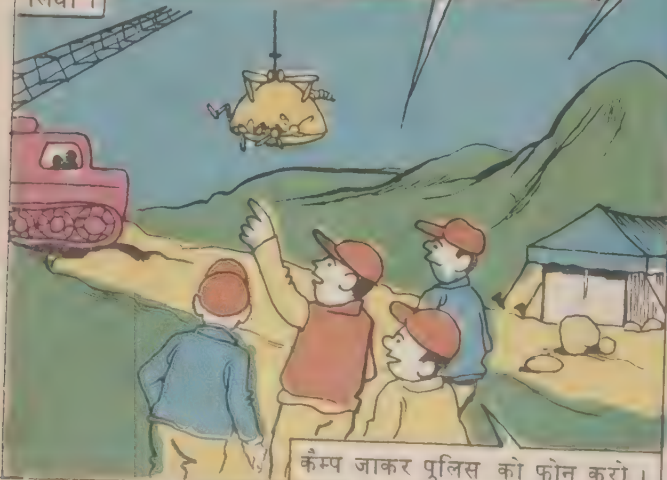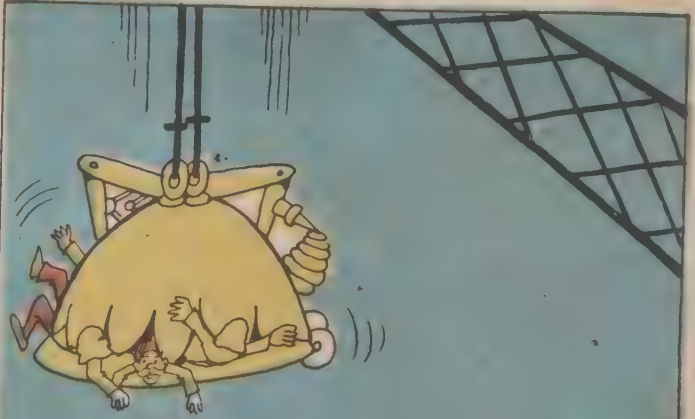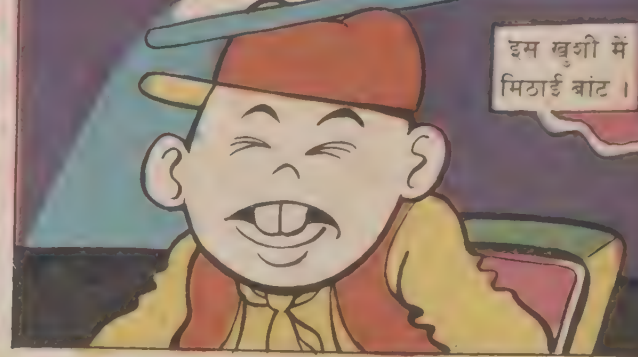
किसने पकड़ा है इन्हें ?
वे दो आदमी क्रेन के अन्दर नजर आ रहे हैं । उन्होंने पकड़ा है ।

थोड़ी ही देर में वहां पुलिस पहुंच गई। ग्रौर डाकू पकड़ने की खुशी में मोटू-पतलू को फूलों में लाद दिया गया। ग्रौर उन्हें दस हजार रुपया इनाम देने की घोषणा की गई।

वह देखो ! डाकुग्रों का सरदार वह है जो घोड़ों का सौदागर बनकर ग्राया था। हमें यहां तक लाकर ग्रपने गैंग में मिलाने की चाल चली थी इसने।
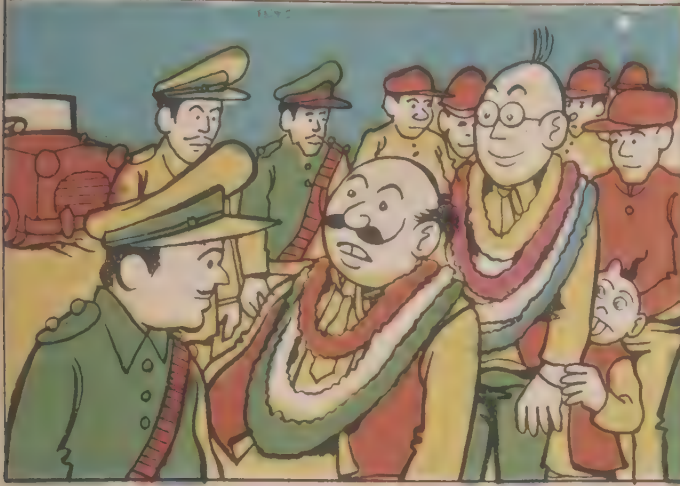
कुछ देर बाद तीनों ग्रपने घर की ग्रोर ग्रा रहे थे।
फूलों के हार तो हमने ग्रपने गले में डलवा लिये, पर यह समझ में नहीं ग्राया कि डाकू पकड़े कैसे गये ? इसका सेहरा किसके सर है।
यूं कहो, इसका गूमड़ा किसके सर है।

घसीटाराम का बच्चा कहां गया ? कुछ इसकी भी चिन्ता है ?
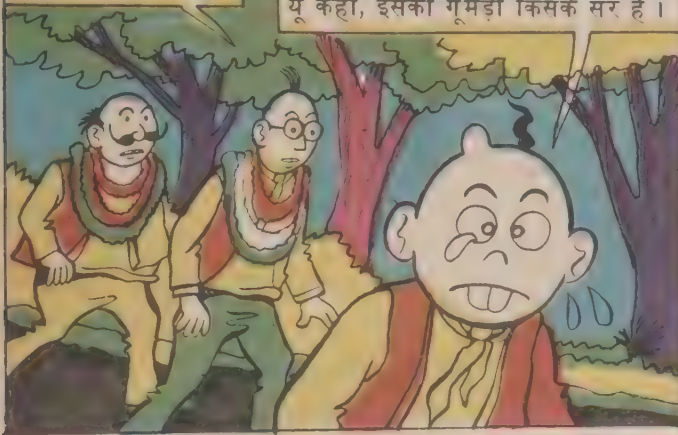
मेरी चिन्ता करने वाले बहुत हैं यहाँ, 'पहचान लो, गिद्ध का बच्चा कौन-सा है ग्रौर घसीटाराम का बच्चा कौन-सा है।
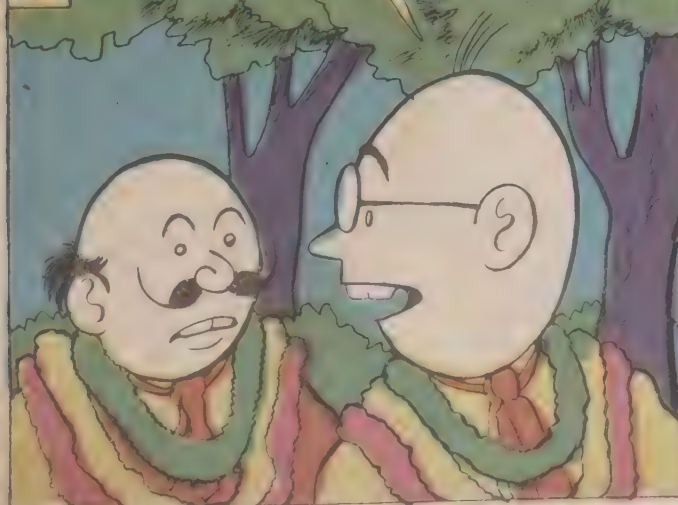
बच्चा झमूरा

आज हम तुम्हारे साथ लंच करें तो कैसा रहे ?

नेकी और पूछ-पूछ । यह तो मेरे लिये सौभाग्य की बात है ।

लन्च के लिये हम कहां चलें तुम्हारे साथ ?

उस सामने वाले रैस्टोरेंट में चलो ।

झमूरा बड़ा भाग्यशाली है जो इसे इतनी लड़कियों का साथ मिला है ।

तुमने हमारा दिल नहीं तोड़ा, एक बार में बात मान ली, इसके लिये धन्यवाद ।

सब खाना खा चुके तो वेटर ने बिल लाकर झमूरे को थमा दिया ।

क्या मतलब ? बिल मुझे पे करना है ??

हमने तुम्हारे साथ लंच करने की बात कही थी, ना कि तुम्हें अपने साथ लंच कराने की ।

तुम्हें बिल पे करने से रोक कर हम तुम्हारा दिल नहीं तोड़ना चाहतीं ।

मेरे पास पैसे नहीं हैं बिल पे करने के लिये ।

कोई बात नहीं । मैं तुम्हारा नाम दीवार पर लिख रहा हूं ।

इससे तो बड़ी बदनामी होगी । जो देखेगा वह मेरे नाम पर थू-थू करेगा ।

कोई बात नहीं । जरा अपने कपड़े उतारो ।

झमूरे ने रैस्टोरेंट के ३५ रुपये देने हैं

कोई नहीं देखेगा । मैं नाम के आगे तुम्हारे कपड़े लटका रहा हूं । रुपये देना तो कपड़े ले जाना ।
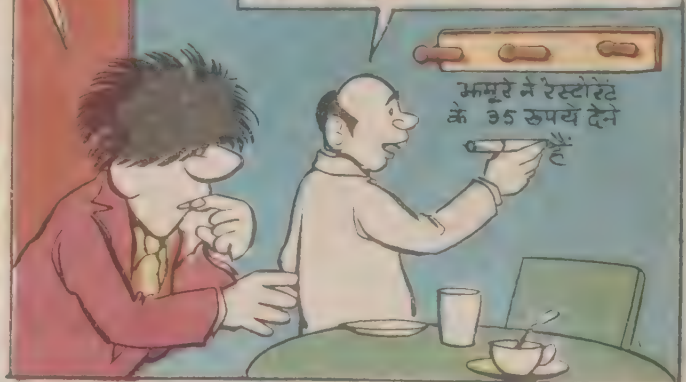
बच्चा झमूरा बड़ा भाग्यशाली है । जो इसे इतनी सारी गर्ल फ्रैंडस मिली हैं ।

अरे, इस भाग्यशाली की यह हालत कैसे हो गई है ?

इन कलंदरों की नई कलाकारी अगले सप्ताह फिर देखिये ।

टैनिस की कमाई १९७७ का हिसाब

यह तो आपको पता ही है कि आजकल लान टैनिस का खेल पैसा बरसा रहा है। एक समय तो अमरीका के एक उद्योगपति ने कहा था कि यदि वह कारखाना खोलने की बजाय टैनिस का खिलाड़ी बना होता तो ज्यादा पैसा कमा रहा होता। आज टैनिस में कोई मध्यम दर्जे का खिलाड़ी भी यद्यपि कोई बड़ी चैम्पियन शिप नहीं जीतता परन्तु उसकी आय देखें तो आंखें फटी की फटी रह जाती हैं।

कमाई में चोटी पर गुलेरमो विलास रहे। उन्होंने वर्ष भर में लगभग साढ़े चोसठ लाख रुपये की कमाई की।

ग्यारह खिलाड़ियों ने १५ लाख रुपये से अधिक कमाये। २९ खिलाड़ियों ने आठ लाख रुपये से अधिक कमाये। ५६ ने पांच लाख के आसपास की रकम कूटी—११३ खिलाड़ी दो लाख की श्रेणी में आये और ५४ ने एक लाख की कमाई की। एक अकेले खिलाड़ी (टीम नहीं) द्वारा खेले जाने वाले खेल ने वर्ष में विश्व में केवल उसी वर्ष मात्र में २६३ खिलाड़ियों को लखपति बनाया, है नहीं हैरान करने वाली बात? कम से कम इनमें पन्द्रह-बीस खिलाड़ी ऐसे निकलेंगे जिन्होंने लगभग पांच वर्ष की अवधि में ही एक करोड़ रुपये की कमाई की सीमा पार कर ली होगी। वैसे तो इससे भी ज्यादा पैसा बॉक्सरों ने कमाया, लेकिन कितने? यही दो-तीन-चार ने जो कि चोटी पर थे विशेषकर जो मुहम्मद अली से भिड़ते थे लेकिन थोक भाव पर लखपति बनाने वाला खेल लॉन टैनिस ही है।

अपने खेल जीवन में पहली बार डिक स्टॉकटन, विटास जेरू लेटीस तथा बॉब हैविट १५ लाख रुपये कमाई की सीमा पार कर गये।

प्रथम बार आठ लाख रुपये कमाई की सीमा पार करने वालों में अपने ही देश के विजय अमृत राज भी रहे हैं।

विलास ने १९७६ की तुलना में [illegible] आमद की। ब्रियन गॉट फ्राइड ने [illegible] उन्नति की। वे विश्व के चोटी के पांच कमाऊ खिलाड़ियों में रहे। उनकी आय चालीस लाख रुपये के आसपास रही।

जय बोलो लॉन टैनिस की।

वीर अर्जुन पुरस्कार

इस वर्ष राष्ट्रपति ने १९७५ और १९७६ वर्ष के लिये खिलाड़ियों को वीर अर्जुन पुरस्कार दिया उनकी सूची इस प्रकार है।

१९७५	१९७६
अनसूया बाई—एथलेटिक्स—	गीता जुत्सी
हरीचन्द — ,, —	बहादुर सिंह
देवेन्द्र आहूजा—बेडमिंटन—	आमी घिया
इकबाल—बाल बैडमिंटन—	सैम क्राइस्ट दास
हनुमान सिंह—बास्केट बाल	
गवास्कर—क्रिकेट —	शांता रंगा स्वामी
अमर सिंह—साइकलिंग	
एस. के. जमशेद—गोल्फ	
मंटू देवनाथ—जिमनास्टिक्स	
रूपा सैनी—हॉकी	
गोविन्दा— ,,	
ऊषा नगरकर—खो-खो—	शेखर धारवाड़ कर
श्रीरंग इनामदार— ,,	
मे० वीरेन्द्र पाल सिंह—पोलो	
स्मिता देसाई—तैराकी	
एम. एस. राना— ,,	
के. सी. एलाम्मा—वाली बॉल—	जिमी जार्ज
रनवीर सिंह— ,,	
दलबीर सिंह—वेट लिफ्टिंग—	के बाला मुरुगा
नंदम टेबल टैनिस—	शैलजा सलोखे
घुड़सवारी—	एच. एस. सोढ़ी

राजू महर्जन—काठमांडू

प्र० : लान टेनिस का सबसे अच्छा खिलाड़ी कौन है? लान टेनिस का प्रारम्भ कब और कहां हुआ था?

उ० : ब्योन बोर्ग तथा जिम कॉनर्स।

मनोज कुमार जैन—सहारनपुर

प्र० : भागवत चन्द्रशेखर का अधिकतम स्कोर क्या है? कब और किस देश के विरुद्ध किस सन् में और कहां हुआ?

उ० : चन्द्रशेखर ने अधिकतम २२ रन बनाये थे। उन्होंने इंगलैंड के विरुद्ध एजबेस्टन टैस्ट में १९६७ में बनाये थे।

गौरी शंकर 'अग्रवाल'—पत्थलगांव

प्र० : मैं एक क्रिकेट खिलाड़ी हूं एवं विकेट कीपर बनना चाहता हूं। कृपया अपनी राय लिखें।

उ० : आप अपने स्थानीय जानकारों से राय लीजिए क्योंकि बगैर आपका खेल देखे हम अपनी राय कैसे दे सकते हैं।

राधेश सिंगल 'मोनू'—मोगा

प्र० : क्रिकेट खिलाड़ी लिली चैपल वैस्टइंडीज की टीम में नहीं हैं इस का क्या कारण है?

उ० : लिली और चैपल आस्ट्रेलिया खिलाड़ी हैं वह क्यों वैस्टइंडीज की टीम में होंगे?

जब्बार बिसकश—बीकानेर

प्र० : भारत और रूस के बीच क्रिकेट मैच कब होने वाला है?

उ० : रूस क्रिकेट नहीं खेलता।

अजय कुमार गुप्त—तपकरा (उ० प्र०)

प्र० : गुल्ली डण्डा का खेल क्या अन्य देशों में भी प्रचलित है?

उ० : नहीं।

कैलाश खण्डेलवाल—जयपुर

प्र० : आजकल इन्जीनियर भारतीय टीम से क्यों नहीं खेलते? क्या उन्होंने क्रिकेट से सन्यास ले लिया है?

उ० : उनकी उम्र अब टैस्ट मैच खेलने की नहीं रह गयी है।

जोहर अली—इन्दौर

प्र० : चन्द्रशेखर ने टैस्ट मैचों में कुल कितने विकट लिये तथा किस-किस देश के खिलाफ क्रम लिखिये?

उ० : चन्द्रशेखर ने अब तक २२२ विकटें ली हैं—इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्ट-इंडीज व न्यूजीलैंड के विरुद्ध ली विकटें क्रम से ९५, ३८, ५३ तथा ३६ हैं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बास्केटबाल कैसे खेलें

रोकी गई गेंद

गेंद को तब रुका हुग्रा घोषित किया जाता है, जब प्रतिपक्षी दलों के दो खिलाड़ियों द्वारा एक या दोनों हाथों से गेंद को दृढ़ता से थाम लेते हैं या गेंद का रोकना उस समय होता है, जब घिरा हुग्रा खिलाड़ी गेंद को पाँच सैकिण्ड से भी अधिक समय तक खेलना चालू नहीं करता। गेंद खेलने का मतलब है, उसे पास देना, शूट करना, बेट करना, लुढ़काना या ड्रिबल करना।

अधिकारियों को अति शीघ्र हैल्ड बाल नहीं देना चाहिए, जिससे कि खेल की प्रगति में अनावश्यक अवरोध पैदा हो।

जब तक दोनों खिलाड़ी एक या दोनों हाथ दृढ़ता से गेंद पर न रख दें, जिससे कि कोई भी गेंद पर पूर्ण अधिकार न कर सके, हैल्ड बाल नहीं देनी चाहिए।

किसी खिलाड़ी के कब्जे में गेंद है, जो फर्श पर लेटा हुग्रा या बैठा हुग्रा है, तो उसे गेंद फेंकने का अवसर मिलना चाहिए, किन्तु हैल्ड बाल दी जावेगी, यदि चोट पहुंचने का डर है तो।

जब हैल्ड बाल दी जाये तो निकटतम वृत में दो प्रतिद्वन्द्वी खिलाड़ियों के बीच गेंद को उछाला जायेगा। सन्देहास्पद स्थिति में गेंद केन्द्र में उछाली जायेगी।

विशेष परिस्थिति में जम्प-बाल

यदि गेंद सीमा के बाहर चली जाती है और एक साथ दो प्रतिद्विन्द्वियों द्वारा स्पर्श हुई है या अधिकारी को यह निश्चय नहीं हो कि किस खिलाड़ी के अन्तिम रूप से छूने पर गेंद बाहर गई है अथवा अधिकारियों का इस सम्बन्ध में मतभेद हो, तो निकटमत वृत में दो प्रतिद्वन्द्वियों के बीच जम्प-बाल द्वारा खेल चालू किया जायेगा।

जब कभी गेंद बास्केट के अवलम्बों पर रुक जाए तो गेंद का खेलना मुक्तक्षेप रेखा के निकटतम स्थान से जम्प बाल द्वारा चालू किया जायेगा, सिवाय उस दशा में जब तकनीकी फाउल के फलस्वरूप मुक्तक्षेप के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाय; ऐसी दशा में गेंद का खेलना सामान्य ढंग से चालू किया जायेगा।

खिलाड़ी द्वारा गोल करना

जब खिलाड़ी के पास गेंद है और अधिकारियों की राय में वह गोल के लिए गेंद फेंक रहा है या फेंकने का प्रयास कर रहा है, तो उसका यह कार्य गोल करने का प्रयास माना जाता है।

खिलाड़ी के हाथों से गेंद के निकलने पर भी शूटिंग का कार्य चालू रहता है। जम्प बाल पर गेंद को टपाने के समय गेंद पर किसी भी खिलाड़ी का अधिकार नहीं होता है, अतः यह किसी के लिए नहीं माना जायेगा कि उसका कार्य शूटिंग का कार्य है, चाहे उन में से कोई एक खिलाड़ी गेंद को बास्केट की ओर या बास्केट में टपाये।

३ सैकिण्ड का नियम

कोई भी खिलाड़ी विपक्षी की अन्त-रेखा और मुक्तक्षेप रेखा के किनारे के बीच के प्रतिबन्धित क्षेत्र में तीन सैकिण्ड से अधिक देर तक नहीं रहेगा, जब कि गेंद उसकी टीम के कब्जे में है। तीन सैकिण्ड का नियम सीमा पार समस्त स्थिति में लागू होता है और समय की गिनती उसी क्षण आरम्भ हो जाती है, जब फेंकने वाला खिलाड़ी सीमा पार हो और गेंद पर उसका कब्जा हो।

प्रतिबंधित क्षेत्र को घेरने वाली रेखाएं उसका भाग हैं और जो खिलाड़ी इन रेखाओं में से किसी एक रेखा को स्पर्श किये हुए हैं तो वह क्षेत्र में है। तीन सैकिण्ड का नियम गोल करने के प्रयास में गेंद के हवा में होने के समय लागू नहीं होता या वह बैक-बोर्ड से टकराती है और उसका खेलना रुक जाता है तो भी लागू नहीं होता; क्योंकि ऐसे अवसरों पर गेंद पर किसी का भी कब्जा नहीं होता है। जो खिलाड़ी प्रतिबंधित क्षेत्र में तीन सैकिण्ड से कम समय में रहने के बाद गोल के लिए ड्रिबल करता है तो उसे समय का लाभ दिया जा सकता है। इस नियम का भंग होना उल्लंघन है।

तीस सैकिण्ड का नियम

जब कोई टीम गेंद को अपने कब्जे में करे, तो उसे ३० सैकिण्ड के अन्दर-अन्दर गोल के लिए प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से असफल होने पर नियम का उल्लंघन माना जायेगा।

यदि गेंद ३० सैकिण्ड की अवधि में सीमा से पार चली जाती है और गेंद उसी टीम को मिलती है तो फिर से ३० सैकिण्ड गिने जायेंगे। यदि एक ही टीम के अधिकार में गेंद रहती है तो विपक्षी के गेंद को छू लेने मात्र से नये सिरे से ३० सैकिण्ड नहीं गिने जायेंगे।

यदि कोई खिलाड़ी जानबूझ कर गेंद को विपक्षी पर फेंकता है या टपाता है, जिस से गेंद उसे छू कर सीमा के बाहर निकल जाए तो गेंद विपक्षी को मिलेगी, चाहे गेंद उस टीम को छू कर बाहर हो। यह प्रावधान इसलिए रखा गया है कि कोई टीम अनुचित रूप से नये सिरे से ३० सैकिण्ड की अवधि का लाभ न ले सके।

खेल की अवधि की समाप्ति सम्बन्धित समस्त धाराएं इस स्थिति के लिए लागू होंगी।

उल्लंघन और दण्ड

नियमों का भंग किया जाना उल्लंघन है, जिसके दण्ड-स्वरूप अपराधी टीम गेंद खोयेगी।

जब नियमोलघंन विपक्षी से सम्पर्क होने के कारण हो या खिलाड़ी भावना के विपरीत आचरण के कारण हो, तो उल्लंघन फाउल होता है, जो अपराधी के नाम लिखा जाएगा और उसके फलस्वरूप इन नियमों में निर्धारित प्रावधानों के अनुसार दण्ड दिया जायेगा।

उल्लंघन के बाद खेलना

नियमों के भंग होने के कारण खेल रुकने के बाद खेल चालू किया जायेगा—

(क) सीमा पार से मुक्तक्षेप द्वारा, या

(ख) किसी एक वृत में जम्प बाल द्वारा, या

(ग) एक या अधिक मुक्तक्षेप द्वारा

उल्लंघन होने पर प्रक्रिया

जब उल्लंघन हो तो खेल रुक जाता है। उल्लंघन होने के निकटतम स्थान पर पार्श्व रेखा से मुक्तक्षेप के लिए निकटतम विपक्षी खिलाड़ी को गेंद सौंपी जायेगी। इस उल्लंघन के फलस्वरूप खेल रुकने की अवधि में यदि गेंद बास्केट में गिर जाये तो कोई अंक नहीं दिया जायेगा।

क्रमशः
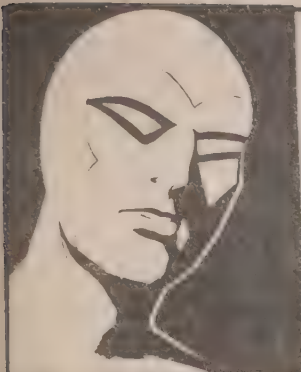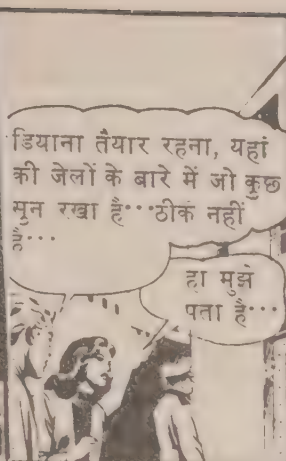
फैण्टम और डियाना की नौकरी
डियाना तैयार रहना, यहां की जेलों के बारे में जो कुछ सुन रखा है···ठीक नहीं है···
हां मुझे पता है···
जेलर साहब··· यू० एन० कमेटी आपकी जेल देखना चाहती है ।
अहा, हां हां क्यों नहीं, जरूर देखो···
कुछ तो सो रहे हैं कुछ सुबह का नाश्ता कर रहे हैं···देखो···
सो रहे हैं··· दोपहर तक ? खाना इनकी कोठरी में ?
और काफी ?
हां···और डाल दो, धन्यवाद···
गार्ड ही इनको खाना परोस रहे हैं ?
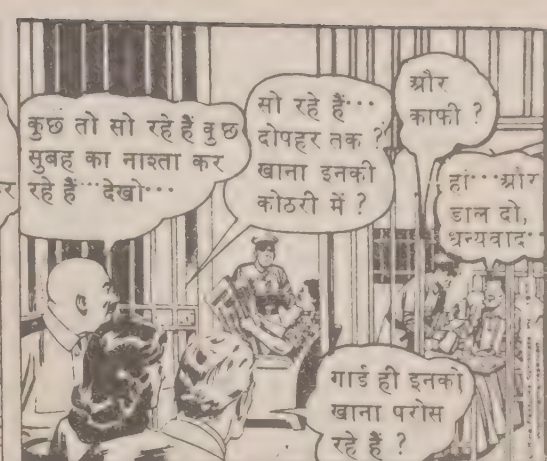
यह सबसे छोटी कोठरी है बिल्कुल अकेला रखा गया है···
दरवाजे और खिड़कियां बिना सलाखों के ?
तीन वक्त का बढ़िया खाना छोड़कर कौन भागना चाहेगा···?
यह तो किसी होटल का बढ़िया कमरा लगता है ।
इनको तीन वक्त खाना···और दोपहर तक सोने देना ?
हां···अगर टैनिस खेलने का प्रोग्राम हो···तो ही जल्दी उठते हैं···
हर रोज पार्टी ···डांस···पीना ···बहुत हो जाता है···।

ताराकीमो के कैदी···
जेलर साहब क्या तुम्हारे कैदी कभी काम नहीं करते ?
इन्हीं से पूछो···
सिर्फ तब जब हमें व्यायाम की जरूरत होती है···
और हां अगर हमारा मन करे तो···
ईईईईईऊऊहूं !
यह आवाज कैसी थी ?
कोई चिल्ला रहा है !
अर···कराटे···यह एक प्रकार का खेल है···
ओह !
याहहह !
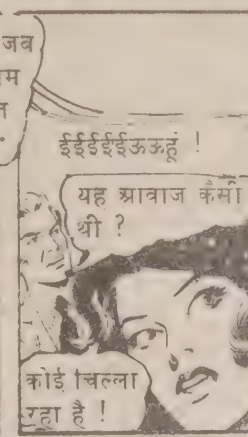
तुम लोग मेरी आधुनिक जेल के बारे में जरूर लिखोगे न ?
अर···जेलर साहब, हम कुछ और जेलें देखना चाहते हैं ।
क्षमा करना, बस आज के लिए इतना ही काफी है ।
लेकिन, मेजर···
वापस जेल की कोठरियों में ।
दिन में तीन वक्त खाना ···दोपहर तक सोना !
वो कह रही थी तुम्हारे कैदी कभी काम भी करते हैं ?
मजाक खत्म हुआ । अपनी गार्ड की वर्दी पहनो और अपनी-अपनी ड्यूटी पर जाओ !
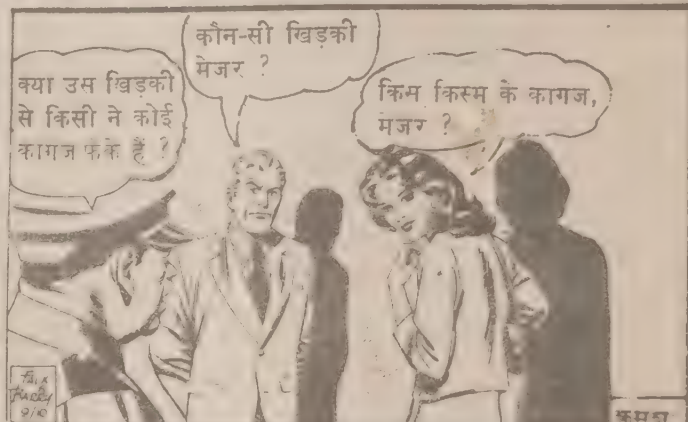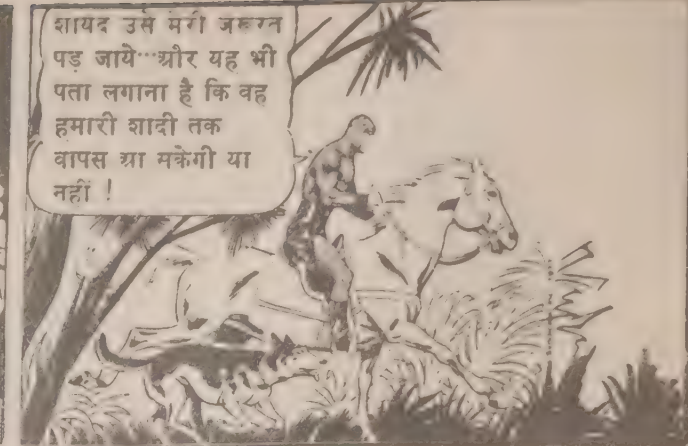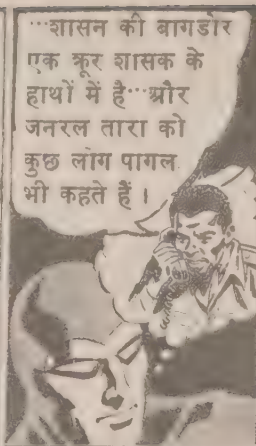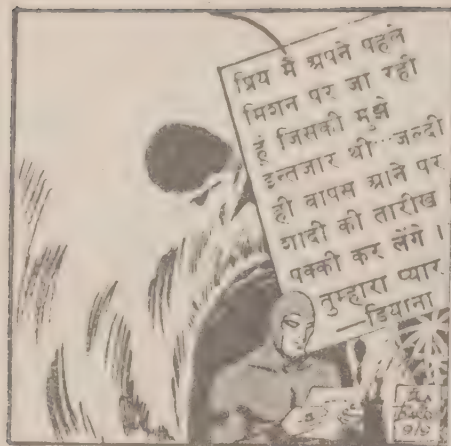
इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पहला, दूसरा या तीसरा इनाम जीतिये, अपना नाम व पता सही और साफ-साफ लिखें। आप चाहे तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं।

नाम ------------------------

पता ------------------------

कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि ३ जून १९७८

प्र० : रडार किस सिद्धांत पर कार्य करता है? सुरेन्द्र सिंह यादव—कानपुर

उ० : रडार का अर्थ है रेडियो तरंगों द्वारा किसी वस्तु की दिशा तथा क्षेत्र का पता लगाना। जब वैज्ञानिकों को पता चला कि रेडियो स्टेशन द्वारा प्रसारित ध्वनि तरंगे हवाई जहाजों द्वारा ग्रहण की जाती हैं तो उन्होंने एक ऐसे यन्त्र का विकास किया जो इन तरंगों के वायुयान से टकराकर वापिस आने पर उन्हें फिर से ग्रहण कर सके।

रडार द्वारा बहुत अधिक उर्जा लिए हुए रेडियो की तरंगें प्रसारित की जाती हैं, इनमें रेडियो उर्जा की गति १८६,००० मील एक सैकेन्ड में होती है। कोई भी वस्तु जैसे वायुयान या पानी के जहाज इत्यादि जब इन तरंगों से टकराते हैं तो कुछ उर्जा वापिस प्रसारित करते हैं जैसे दर्पण छाया प्रतिबिम्बित करता है। ये वापिस आने वाली उर्जा तरंगे रडार द्वारा पुनः ग्रहण कर ली जाती हैं। रडार सैट में रेडियो के रिसीवर इन तरंगों को ग्रहण कर ये पता लगाते हैं कि ये तरंगे रडार से जाकर वापिस कितने समय में लौटीं यदि तरंगे एक सैकिण्ड में लौटीं तो इसका अर्थ हुआ तरंगों ने १८६,००० मील की यात्रा की तथा जिस वस्तु से टकराई वो इसकी आधी दूरी पर है अर्थात ६३,००० मील दूर है। कम दूरी पर की वस्तु से टकराकर आने में तरंगों को बहुत कम समय लगता है, परन्तु आधुनिक एलैक्ट्रोनिक सर्कट द्वारा इसे भी आसानी से नाप लिया जाता है।

आने वाली वस्तु की दिशा का पता लगाने के लिए, रडार से तरंगें केवल एक ही दिशा में प्रसारित की जाती हैं तथा रडार के दिशा ऐन्टिना को जब तक घुमाया जाता है, जब तक किसी विशेष दिशा से उर्जा प्रतिध्वनित न हो। ध्वनि पाने पर वस्तु की दिशा का ठीक अनुमान हो जाता है।

आधुनिक गति के युग में रडार एक बहुत उपयोगी यन्त्र है। रडार द्वारा धुँध में फंसे जहाज, खराब मौसम के कारण खोये हुए वायुयान तथा बहुत तेज गति जाती मोटरों इत्यादि का पता लगाया जाता है। तथा आपत्ति में उन्हें दिशा इत्यादि के बारे में जानकारी दी जाती है।

नौका संचालन कार्य में भी रडार द्वारा बहुत सहायता प्राप्त होती है, समुद्र में तैर रहे दूसरे जहाजों की स्थिति का पता लगाने में भी रडार काम में लाया जाता है। आधुनिक युग में रडार एक अत्यन्त उपयोगी यंत्र साबित हुआ है।

प्र० : कैक्टस पौधे कम पानी के स्थानों में भी किस प्रकार जीवित रहते हैं?

उ० : कैक्टस के पौधे रेगिस्तान में भी आसानी से उगते तथा जीवित रहते हैं इनमें सुन्दर फुल भी निकलते हैं। रेगिस्तान में पानी की कमी ही जीवन को कठिन बनाती है, कैक्टस के अधिकतर पौधे बनावट में ऐसे होते हैं कि थोड़े मे पानी को कुशलता से सोख कर अपने अन्दर एकत्रित करके रख लेते हैं। इन पौधों की जड़ों का जाल धरती के ऊपरी हिस्से पर दूर तक फैल जाता है और थोड़ी सी वर्षा के पानी को धूप तथा गर्मी के कारण सूखने से पहले ही सोख लेते हैं तथा उसे अन्दर के टिशू में संग्रहित करके रख लेते हैं।

कैक्टस में भी और पौधों के समान ६०% पानी होता है। ये पौधा सघन होता है तथा इसी अनुपात इसका आकार भी होता है ये गोलाकार, अर्धगोलाकार, लम्बोतरे तथा ट्यूब के समान होते हैं। इन पौधों की सतह इनके धन से काफी कम होती है जिससे गर्मी के कारण इनका पानी कम सूखता है। गर्मी मे पानी को बचाने में इनकी मोटी त्वचा तथा कम पत्ते भी सहायता करते हैं। दूसरे पौधों में जो काम उनके पत्ते करते हैं वो काम इन पौधों के तने ही करते हैं। इनके हरे तनों में स्टोमेटा के छिद्र होते हैं। ये छिद्र भी बहुत कम होते हैं ताकि इनका भीतरी पानी सूखने से बचे। इन पौधों में जल संचित करने के लिए एक विशेष प्रकार का टिशू भी होता है ये टिशू पानी मिलने पर खूब फूल जाता है तथा पानी को इकट्ठा कर लेता है। कैक्टस रेगिस्तान में पाये जाने वाले सुन्दर पौधे होते हैं।

आजकल घरों में भी सजावट के लिए कैक्टस के पौधे उगाये जाते हैं क्योंकि और पौधों की अपेक्षा इनकी देखभाल आसान होती है।

प्र० : कृपया भिन्न-भिन्न देशों की चल मुद्रा के नाम तथा चिन्ह और भारतीय रुपये की तुलना में मूल्य बताइये?

रश्मी—जयपुर

उ० : भिन्न-भिन्न देशों की चलमुद्रा के नाम तथा चिन्ह और भारतीय रुपये की तुलना में मूल्य नीचे दिये हैं।

देश	चिन्ह	विदेशीय मूल्य	भारतीय रुपये में मूल्य
आस्ट्रेलिया	आस० डालर (As S)	१	६. ३३७
यू. एस. एस० आर०	रूबल	१	११. ६३३
ब्रिटेन	पाँउड (£)	१	१५. ८४७
फ्राँस	फ्रैंक (Fr Frc)	१	१: ६८६
जापान	येन (Jap yen)	१००	३. ३८६
वीडन	क्रोनर (Sw Kr)	१	१. ७४५
श्री लंका	रुपया	१	०. ५२६
बंगलादेश	टका	१००	५७. ८४५
पाकिस्तान	रुपया	१	०. ८१६
इन्दोनेशिया	रुपया	१००	१. ६४६
आस्ट्रिया	शिलिंग (AsSch)	१००	५३. ७०५
इटली	लिरा (ItLira)	१००	०. ६३८
कुवैत	दिनार	१	२८.६८५

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जी हां, विभिन्न जानवरों ने हमारे दीवाना के माध्यम से मानव मात्र के विभिन्न नारे अथवा संदेश भेजे हैं। आप भी पढ़ कर आनन्द उठाइये।

जो हुवाऽऽ सो हुवा
आगे की फिक्र कर
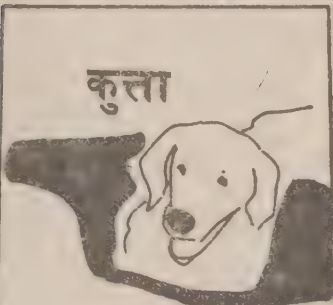
भौंकवास
बन्द करो।

मर्ज बढ़ता गया जूं जूं
दवा की
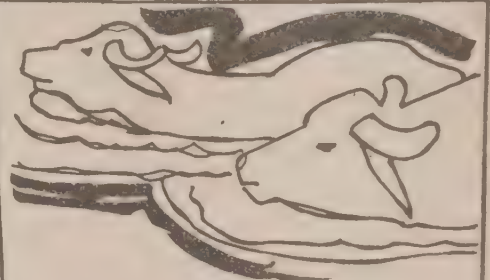
ऑऽऽऽराम हराम है

खोटा पैसा और खो-टा
बेटा मुसीबत में काम
आता है।

मुर्गा
हमारी बांगें
पूरी करो

भिन भिन्नता में एकता
हमारे देश की
विशेषता है

घोड़ा
हिन हिनदी हमारी
राष्ट्र भाषा है ।
मैंढ़क
आपको लोक टर्र टर्र
चाहिए या तानाशाही ?
कव्वा
उधार प्रेम की काएची है
गाय
मेरा तन मन थन देश को
सेवा में
अर्पित है ।
पंछी
राजनीति महज चौंच ले
बाजी है ।
सांप
हिस्स्सट्री स्वयं को
दोहराती है ।
भेड़
बा ऽऽऽतें कम
काम ज्यादा
बत्तख
नेकी कर क्वेंऽऽमें
डाल
शेर
धोबी का कुत्ता न
घर्रर्रर का न
घाट का
गधा
जो जैसा करेगा
वैसा ब्रेगा
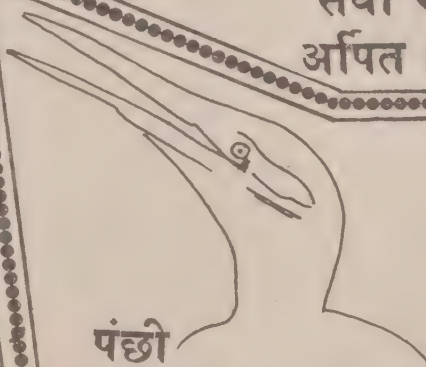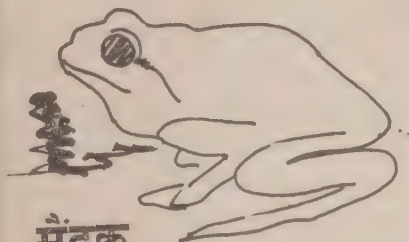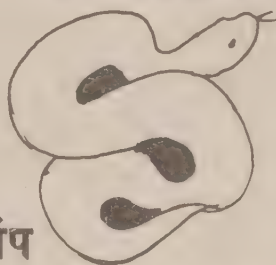
ओ मेरी अस्वीकृत रचना

आजाद रामपुरी

हाय ! ढेर सारी कल्पनाओं से प्रसूत मेरी रचना, मुझे क्या पता था कि तेरी भी इन निर्दयी संपादकों के हाथों वही गति होगी जो मेरी पूर्व की रचनाओं की हुई थी। मैंने तुझे कोमलकान्त पदावली से ऐसे सजाया था जैसे कोई प्रेमी अपनी प्रेयसी को

अपने साथ फिल्म देखने की स्वीकृति प्राप्त करने से पूर्व सजाता हैं। मैंने अनुपम शब्द न जाने कहाँ-कहाँ तुझमें समाहित कर दिये थे, और न जाने कैसी-कैसी अर्थगाम्भीर्य की मनोहारी झलकियाँ तुमें मोतियों की भाँति जड़ दी थीं। तू मेरे उन असंख्य स्वप्नों की सजीव सन्तान है जो मेरे कवि हृदय में न जाने कब से हिलोरी ले-लेकर मुझे तुझ जैसी कृति के सृजन के लिए विवश कर रहे थे।

तेरी प्रत्येक पंक्ति में मैंने कैसी तुकें बिठाई हैं कि बड़े-बड़े कवि भी जब तुझ में अलंकारों की खोज करेंगे तो उन्हें अपनी नानी याद आ जायेगी और जब वे रस-निष्पत्ति की विवेचना करेंगे तो उनका महाकवि बनने का गरुर हवा हो जावेगा। जो अपने को साहित्य का तीसमारखाँ समझते हैं उन्हें भी तुझे देखते ही आटे-दाल का भाव मालूम हो जावेगा। पर हाय रे तेरा दुर्भाग्य तू किसी एक पत्र या पत्रिका से ही वापिस होकर नहीं आई वरन् जहाँ भी भेजी गई, सभी जगह से सखेद वापिस लौटती रही। यह तेरी जैसी रम्य रचना का अपमान तो है ही, पर मेरी फलती-फूलती आशाओं पर भी तुषारपात है।

तू जिज्ञासावश पूछ सकती है कि वह कैसे, सो सुन। जिस दिन से तू उस पत्रिका के संपादक को भेजी गई थी उसी दिन से तेरे छपने की आशा लगाए बैठा था। सम्पादक जी के घर के पते पर तेरे सम्बन्ध में भेजा गया एक प्रशस्तिपत्र और उनके कार्यालय में तेरा एक माह तक प्रवास, मेरी आशाओं की बगिया को हरी भरी रखने के लिए काफी था। जब तू सम्पादक जी की बगल वाली फाईल में बैठी ऐश कर रही थी, तब इधर में अपने सहयोगी-कवियों पर रौब गांठता था 'बने फिरते हैं कवि, न तुक जानें, न शब्दों के अर्थ, न जानें छन्द, न अलंकार। अभी तक कोई रचना किसी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में नहीं छपवा पाये, वरन् अपने ही मुंह मियां मिट्ठू बने फिरते हैं। देखना शीघ्र ही एक दिन मेरी रचना अमुक प्रतिष्ठित पत्रिका में छपकर आने वाली है।" पर हाय तूने सखेद लौट कर मेरे सभी स्वप्नों को धूल में मिला दिया। तू लौटी भी तो पूरे एक माह के बाद। इस पूरे महीने में रौब गांठता रहा। मुझे क्या पता था कि रचनायें एक माह के बाद तो क्या, साल-साल भर बाद लौटती पाई जाती हैं।

पर तू उस दिन लौटकर क्या आई कि मैंने 'चट मंगनी पट ब्याह' वाली कहावत के अनुसार तुरन्त तुझे दूसरे दुल्हे अर्थात् किसी अन्य पत्रिका के सम्पादक के पास भेज दिया। पर न जाने सभी सम्पादकों की तुझसे पिछले जन्म की क्या शत्रुता है कि वे तुझे गले लगाने को तैयार नहीं होते।

उसका एक कारण तो यह है कि वे तुझ जैसी गम्भीर रचना का सही मूल्यांकन करने में असमर्थ थे, दूसरे वे अपनी पत्रिकाओं का स्तर नहीं बढ़ाना चाहते थे। वे तो सिर्फ ऐसी रचनायें ही छापना चाहते हैं जिसे उन के जैसे बौद्धिक स्तर के लोग आसानी से समझ सकें। फिर जिस रचना के छपते ही रचनाकार को महाकवि-सा यश मिल जाने की आशंका हो, उससे तो सम्पादक ईर्ष्या करेगा ही।

ओ मेरे अमूर्त भावों की सजीव मूर्ति। क्या तू जानना चाहेगी कि तेरी इस दुर्गति के लिये कौन-कौन जिम्मेदार है ? तो सुन। प्रथम तो वे रचनाकर हैं जो रात दिन कहीं न कहीं छपकर मुझमें ईर्ष्या की अग्नि धधकाते रहते हैं। दूसरे नम्बर पर वे संपादक गण भी हैं जिनके पास तुझे प्रकाशित करने का साहस नहीं। हालांकि उनसे मैंने बार-बार कहा कि इस रचना के लिए मुझे पारिश्रमिक नहीं चाहिए। उल्टे मैं सम्पादक महोदय को मुंह मांगा पारिश्रमिक देने को तैयार हूँ। पर उन्होंने कहीं हाथ नहीं धरने दिया और आज तुझे रद्दी की टोकरी की शोभा बना दिया और तीसरा कारण मैं स्वयं हूँ। सो कैसे ? तू पूछेगी ही तो मैं कहूँगा—ऐसे कि मेरा अपना मौलिक तो उस रचना में कुछ था ही नहीं "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनवा जोड़ा" —कुछ शब्द इधर से चुराये तो कुछ लाइनें उधर से लपकीं। कहने को तो तू रचना बन गई, पर वास्तव में तू न इधर की रही और न उधर की। अब तू ही बता, तेरी यह दुर्दशा फिर क्यों न होती ?

मदहोश

परिणाम

अंक नं० १५ में छपी वर्ग पहेली का हल

ह	म	स	फ	र
ट	■	क्री	■	च
या	■	ति	गु	ना
रा	ह	■	ट	का
■	द	र	का	र

विजेताओं के नाम :—

१. शैलेन्द्र कुमार पिंगले-(म० प्र०)
२. विकी पांडेय (लखनऊ)
३. गोपाल अरोड़ा (देहरादून)
४. मेवल कुमार (बिहार)
५. अशोक वशिष्ट (दिल्ली)
६. गुलशन पाभर (पंजाब)

इनाम की राशि सबको बराबर-बराबर बांटी जा रही है।

खुदा के नाम पत्र प्रतियोगिता

हे सृष्टि की रचना करने वाले खुदा,
आपको मेरा बार-बार प्रणाम !

मैं यहां ठीक प्रकार से हूं। आपके क्या हाल हैं। मैंने आपके पास दिनांक ७-५-७७ को जो पत्र भेजा था। उसका उत्तर अभी तक नहीं आया।हमारे काशीपुर में फिल्में बहुत बेकार लग रही हैं। आपके यहां स्वर्ग-लोक में काफी अच्छी फिल्में लग रही हैं। क्योंकि आपने सभी अच्छे एक्टरों को अपने यहां पर बुला लिया है। मैं इस समय ८वीं की परीक्षा दे चुका हूँ। गणेश जी किस क्लास में हैं ? हमारे यहां के स्कूल बहुत निकम्मे हैं। स्कूलों में पंखे नहीं हैं। क्या करें ? इन्द्रलोक में अच्छे स्कूल होंगे। इस समय काशीपुर में बहुत गर्मी पड़ रही है। इन्द्रलोक में अगर गर्मी पड़ रही है तो हमारे नगर काशीपुर से कुछ दूरी पर नैनीताल है। तो आप सपरिवार सहित नैनीताल आयें। वहां गर्मी नहीं है। इस समय यहां की सरकार बहुत निकम्मी है। उन्होंने यहां के १०००) के नोट बन्द कर दिये मेरे परदादा की सम्पत्ति में अधिकतर १०००) के नोट थे। वह बेकार गये। भारत के अच्छे-अच्छे लेखक तो आपने बुला लिये। हम पढ़ें क्या, हमें आपसे शिकायत है कि उन्हें वापस भेज दें। ताकि भारत अच्छा देश हो जाये अगर इस बार गणेश जी पास हो जायें तो मिठाई जरूर भेजें।

विजेता :- राजेन्द्र कुमार आर्य
संजय न्यूज एजेन्सी
होरी लाल का बाग
जिला नैनीताल के सामने
(काशीपुर)

बाल क्यों बढ़ायें प्रतियोगिता

बहुत से श्रोताओं ने अच्छे-अच्छे सुझाव हमें लिखकर भेजे हैं, मगर सब से अच्छे सुझाव अशोक मिगलानी के प्राप्त हुये।

विजेता :— अशोक मिगलानी
जीवन भवन रेलवे रोड, कैथल
(हरियाणा)

सवाल यह है ?
जनता पार्टी उत्तर प्रदेश में तीन चुनाव क्यों हारी ?
पार्टी के बड़े बड़े नेता एक दूसरे से मित्रता जताने के मौके की ताक में रहे और जनता की कठिनाईयों की ओर ध्यान देने की फुरसत ही नहीं मिली।
प्रधान मंत्री ने खाने पीने की समस्या के समाधान के लिये यह तो बताया कि क्या पीयें ....
पर यह नहीं बताया कि क्या खायें ?
कीमतें इतनी ऊपर उठीं, कि बस जरा सी ही और ऊपर उठने की कसर रह गई !
कीमतें
जनता की सेवा के लिये ऊपर तो पहुंचे, पर यह भूल गये कि जनता सेवा का यह बोझ कब तक बर्दाश्त करेगी ?
अरे भाई हमें पांच साल तक तो आज़माओ
पार्टी
जनता
संजय गांधी के पीछे पड़ कर लोगों को "किस्सा कुर्सी का" फ़िल्म के मुकदमे में उलझाये रखा. पर जनता पार्टी के अन्दर जो कुर्सी के किस्से की फिल्म चल रही है, लोगों को उसका पता चल गया।
मुख्य मंत्री पद
अगले सप्ताह ऐसा ही एक और लाजवाब सवाल देखिये।
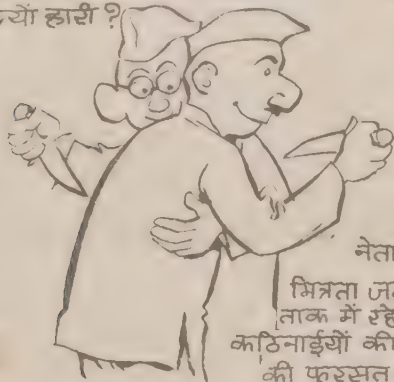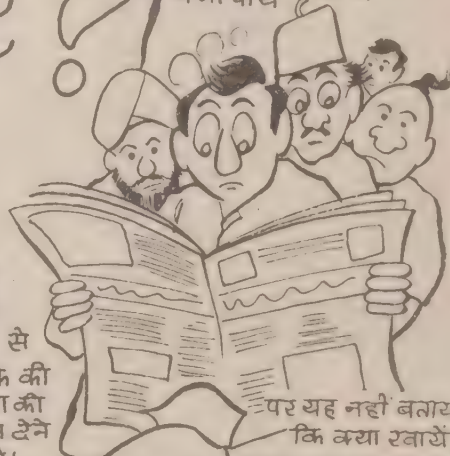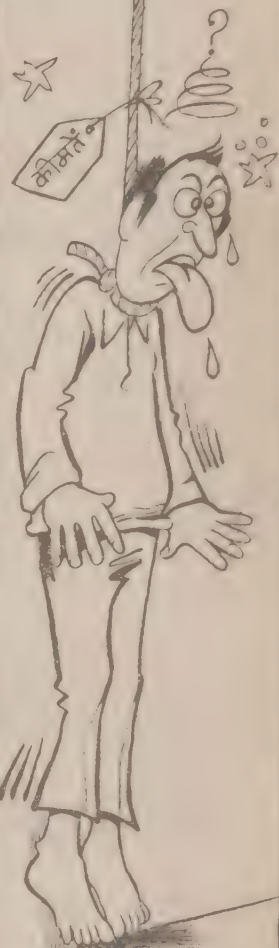
जादूगर मेन्ड्रेक की चित्र कथायें कितनी हैरत में डालने वाली होती हैं। मेन्ड्रेक जादू से अजीब-अजीब करतब करता है। नाम तो मेरा भी उससे मिलता-जुलता है। क्या पता मुझमें भी उस जैसी जादू की शक्तियां हों।
जादूगर की ड्रेस तो जंच गयी मुझ पर, अब केवल यह देखना है कि मुझ में जादू की ताकत है या नहीं। कोई जानवर मिले तो उस पर मेन्ड्रेक की क्रियायें दोहरा कर देखूंगा।
पंचतंत्र
कुछ दूर जाने पर मैंढ़क को एक गिरगिट मिलता है। वह उसी पर प्रयोग करने का निश्चय करता है।
यह मैंने जादूगर मेन्ड्रेक की तरह हाथों से जादुई इशारे किये, देखें क्या होता है!
मेरे जादुई इशारों के करते ही इस जानवर का रंग बदल गया। इसका मतलब मुझमें भी जादुई ताकत है। मैं अब से मामूली मैंढ़क नहीं रहा। मैं जादूगर मैंढ़क हूं।
यह किये मैंने अंगुलियों से जादुई इशारे।
पहले मुझे सांप से बहुत डर लगता था। लेकिन अब डरने की बात नहीं रही। मैं जानवरों की दुनिया का महान जादूगर मैंढ़क हूं। देखते ही देखते इस खौफनाक सांप को रस्सी का टुकड़ा बना दूंगा।
सांप पर मैंढ़क के इशारों का असर नहीं होना था सो नहीं हुआ। सांप ने लपक कर मैंढ़क को निगल लिया। (गिरगिट का तो स्वभाव ही रंग बदलना है। मैंढ़क के इशारों के कारण थोड़े ही रंग बदला था उसका।)
शिक्षा—कई बार कई काम संयोग से अपने आप हो जाते हैं और मूर्ख लोग यह समझ बैठते हैं कि वह उनकी योग्यता के कारण हुआ। इसी धोखे में वह मारे जाते हैं।
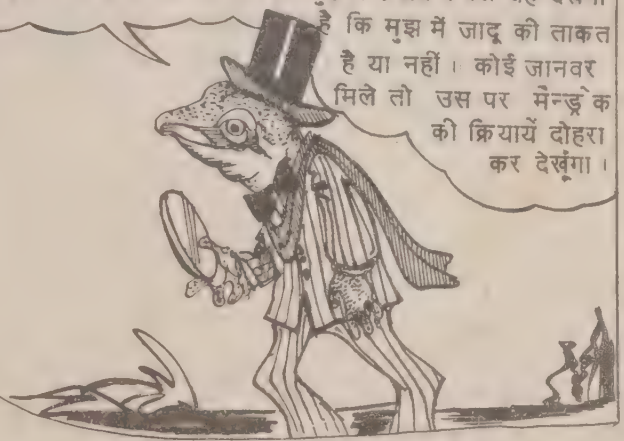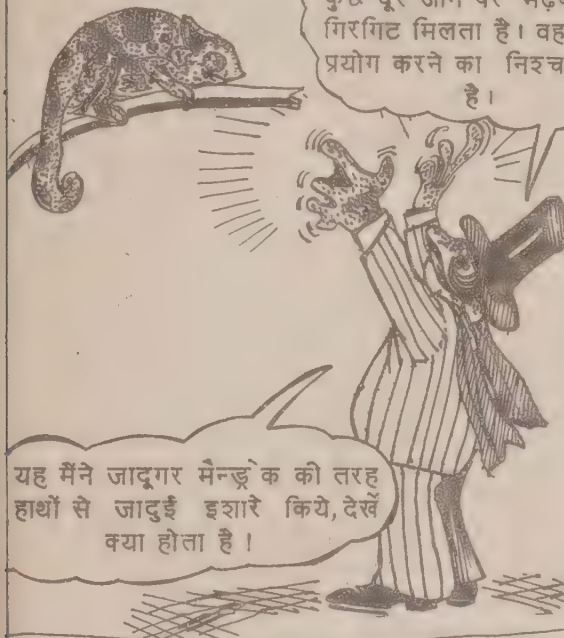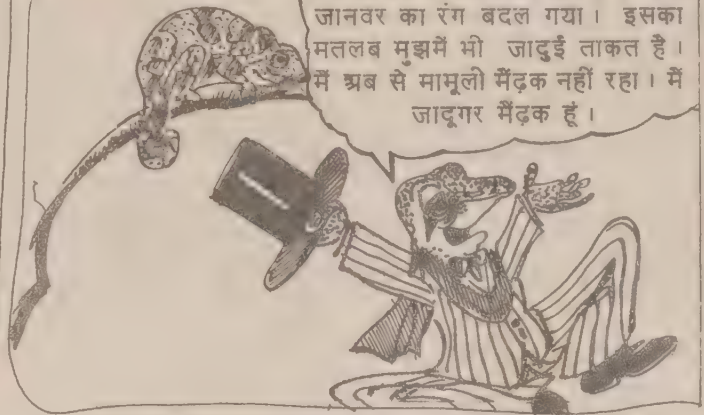
एक लघु कथा

गुरुमंत्र

आजाद रामपुरी

एक पक्के नेताजी के एक सच्चे जी हुजूरिये चमचा थे। चमचा को जीहुजूरी कर अपना मतलब गांठने की सोलह कलायें पूरी तरह रटी-रटाई थीं। होती भी क्यों न जब नेताजी ने आधुनिक युग के सभी रंग-ढंग बड़ी निपुणता के साथ सिखा दिये थे। रहा उनको इस तरह का प्रमाण पत्र देने का प्रश्न सो नेताजी लेने लगे उसका साक्षात्कार। वे कहने लगे कि मान लो तुम्हारे सामने मुख्य मंत्री अपनी कुर्सी पर बैठे हुए हैं और तुम उनके सामने खड़े हुये हो तो तुम उस स्थिति में कौन सी ऐसी गतिविधि या क्रिया-कलाप करोगे जिससे मुख्य मंत्रीजी खुश होने लगें ?

'बन्धुवर' चमचा कहने लगा, 'पहले तो मैं फूल माला लेने दौड़ूंगा और माला लाकर शीघ्र ही मुख्य मंत्री के गले में डाल कर उनका जय-जयकार करने का शुभ अवसर हाथ से नहीं जाने दूंगा।'

'ठीक' नेता जी ने प्रश्न का सही उत्तर पाकर कहा और आगे पूछने लगे मान लो, मुख्य मंत्री किसी वस्तु की फरमाइश करते हैं तो तुम क्या करोगे ?'

'जी मैं' चमचा बोला, 'मैं इतनी चिकनी चुपड़ी बातें करूंगा कि उनको ऐसा लगे कि मानो मैं उन्हें अपने प्राणों से भी प्यारा करके मानता हूं। किन्तु व्यवहार में मैं करूंगा कुछ नहीं क्योंकि जैसा आपने गुरुमंत्र दिया है उनके सामने से दूर होने की मूर्खता मैं किसी भी दशा में नहीं करूंगा।'

'बहुत ठीक, बहुत ठीक' नेताजी ने उछल कर चमचे को शाबाशी दी, उसकी पीठ ठोकी, और बात आगे जारी रखते हुए कहा—

'अच्छा यह और बताओ कि मान लो मुख्य मंत्री अपनी कुर्सी से उठ कर खड़ा हो तो ?'

'तो क्या ?' चमचा शीघ्रता से बोला, 'मैं उनके आगे पहुंच कर कहूंगा हुजूर चलिये न अब देर काहे की ?' और मैं उनके आगे-आगे चल दूंगा।

'धत् तेरे की,' नेता जी ने जोर में आकर गुस्से से कहा, 'तुमने किया-कराया सब गुड़ गोबर कर दिया वरना यहाँ जो किया जाना था उसके लिये यही तो स्वर्ण अवसर था।'

'वह किस तरह, क्या कार्य किया जाना था ? चमचा ने दबी जबान से कि मानो उससे कोई बड़ी भारी भूल हो गई हो, पूछा तो नेता जी गर्ज कर गुस्से में लाल-गर्म होकर दहाड़े।

'अरे मूर्ख, कुर्सी से जैसे ही मुख्य मंत्री का उठना हुआ वैसे ही तुम्हें उनको एक जोर का धक्का मार कर उनकी कुर्सी हथिया लेना है, समझे !

बातें फिल्म की

कमल गोपाल गोस्वामी

क्यों बन को चली, संग में श्रीराम के सीता ?
किसने 'महा भारत' की लड़ाई को था जीता ?
'मीरा' का जन्म 'कृष्ण' के भजनों में क्यों बीता ?
'गालिब' को पसन्द आम था, बोलो कि पपीता ?
कहते थे सभी मिल के कभी इल्म की बातें।
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

बोलो न डियर, कैसी लगी 'सीता और गीता',
'धर्मेन्द्र' ने दिल 'मीना' का किस सन् में था जीता,
किस फिल्म को सेंसर ने लगाया था पलीता,
किस 'हीरो' से 'रोमांस' लड़ाती थी 'बबीता',
करते थे सभी मिल कर कभी इल्म की बातें।
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

लट्टू की तरह उछलता है अब भी यह 'शम्मी',
'शोक का गुलाम' एकदम 'पिक्चर' थी निकम्मी,
दामाद चली ढूंढने 'मुमताज' की मम्मी,
'राखी' तो सदा लेती लंच में मुसम्मी,
यह 'माला सिन्हा' पास है, कुल कितनी जमातें।
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

बोतल का नशा था कभी 'निम्मी' की नजर में,
है अब भी लचक, देखिये 'हेलन' की कमर में,
'शत्रुघ्न' क्या 'रेखा' से भी छोटा है उमर में,
'हेमा' सी दुल्हन जायेगी किस 'हीरो' के घर में,
बैरंग, शर्मा, लौटी हैं कितनों की बरातें।
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

'दस्तक' में 'रेहाना' के, सुना था, पांव थे नंगे,
'दोराहा' की टिकटों के लिए क्यों हुए दंगे ?
सानूं तो फिलम 'शोर' दे नगमें लगे चंगे,
क्या फिल्मी 'विलेन' वाकई होते हैं लफंगे ?
कुल कितनी दफा प्राण ने काटी हैं हवालातें ?
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

'महमूद' के घर क्यों मारा सरकार ने छापा ?
कम क्यों नहीं होता, शर्मा, 'टुनटुन' का मोटापा ?
बेचारी 'सुरैया' का तो आ पहुंचा बुढ़ापा,
'मधुशाला' के 'बच्चन' तो हैं, 'अमिताभ' के पापा,
क्या बिक गयी 'राजू' की कलम और दवातें ?
अब होने लगी आठों पहर 'फिल्म की बातें' ॥

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये
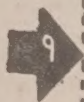
पहले बीच से मोड़िये फिर नं० २ की लाइन को १ नं० की लाइन से मिलाइये।

यही तो है जो आजकल हमें रोज सुनने को मिलता है हिंसा की घटनायें, तूफान आंधी, चोरी, मारपीट, दंगा फसाद, प्रदर्शन, लाठी चार्ज, अपहरण विधान सभाओं में सदस्यों का एक-दूसरे का गला नापना, चीखना फायरिंग, बलात्कार, रेल दुर्घटनायें यान दुर्घटनायें वगैरह-वगैरह। काफी लोग फिल्मों को इसका उत्तरदायी मानते हैं इन सब हिंसक घटनाओं को हम तक पहुंचा कर अखबार मानते हैं कि आजकल फिल्में मारधाड़ से भरी हैं जो कि बुरा मानसिक प्रभाव डालती है तथा हिंसा के लिए भड़काती हैं— ऐसी हिंसक फिल्मों का पता आपको पूरी तरह पृष्ठ मोड़ने पर लगेगा ऐसी फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगनी चाहिये।

१ २

पृष्ठ १३ से आगे
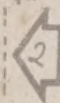
☐ सेठ अग्रवाल की कार हस्पताल के बरामदे के पास रुकी और वह बेचैनी से वहुत तेजी से बरामदे में पहुंचे। उनकी सांस फूली हुई थी और चेहरा उतरा हुआ था। एक स्पेशल वार्ड के सामने सेठ केदारनाथ व्याकुलता से टहल रहे थे...एक ओर बेंच पर उमा बैठी हुई थी...उसका चेहरा भी लहू से भरा हुआ था...पास ही पुलिस का एक सब-इंस्पेक्टर भी था।

सेठ अग्रवाल को देखकर केदारनाथ जल्दी से आगे बढते हुए बोले—

'ओह...सेठ अग्रवाल...आप आ गए ?'

'कैसी है मेरी बेटी ?' सेठ अग्रवाल ने बेचैनी से पूछा—

'अभी तो कुछ पता नहीं...डाक्टर लोग अभी बाहर नहीं निकले।'

'हे भगवान...लेकिन यह सब हुआ क्या ? कैसे हुआ ?'

सेठ केदारनाथ ने संक्षेप में सारी बात सुनाते हुए कहा—

'यह सब इस मूर्ख लड़की के कारण हुआ है। उन्होंने उमा की ओर संकेत किया यह न उसके पति को गधा कहती और न हाथा-पाई तक बात पहुंचती—आपस के साधारण झगड़े में बात पुलिस और अदालत तक पहुंच रही है।'

'हे भगवान...अब क्या होगा ?'

एकाएक वार्ड का दरवाजा खुला और डाक्टर बाहर निकला। वह बहुत परेशान लग रहा था। सेठ अग्रवाल ने उसकी ओर बढ़ते हुए पूछा—

'डाक्टर...क्या हाल है मेरी बेटी का ?'

'बहुत सीरियस केस है—चोट गहरी है...लहू किसी प्रकार बन्द नहीं हो रहा।'

'हे भगवान—'सेठ अग्रवाल गड़बड़ाकर बोले, 'अब क्या होगा ?'

'घबराइए नहीं—हम लोग अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर रहे हैं।'

'लेकिन...लेकिन...मेरी बेटी की जान को तो कोई खतरा नहीं ?'

'कुछ नहीं कहा जा सकता।'

'अरे...वह माँ भी तो बनने वाली है—कहीं कोई उल्टी सीधी चोट तो नहीं लग गई ?'

'माँ बनने वाली है ?' डाक्टर आश्चर्य से बोला, 'यह आपसे किसने कह दिया ?'

'क्यों ?' सेठ अग्रवाल ने असीम आश्चर्य से कहा, 'क्या वह माँ बनने वाली नहीं है ?'

'बिल्कुल नहीं...'

सेठ अग्रवाल की आँखें आश्चर्य से फैली रह गई...इतने में वार्ड का दरवाजा फिर खुला और एक डाक्टर अन्दर से निकला। पहले डाक्टर ने उससे पूछा—

'मिस्टर शर्मा...कुशल तो है ?'

'पेशंट को कुछ होश आ रहा है...लेकिन वह किसी दलजीत को पुकारे जा रही है।'

'ओह...!'

'यह मिस्टर दलजीत कौन है ?'

'मेरा दामाद है—'सेठ अग्रवाल ने जल्दी से कहा—

'सेठ साहब, किसी तरह भी इस समय आप मिस्टर दलजीत को बुलवाईए...इस समय यहां उनका होना आपकी बेटी के जीवन के लिए बहुत आवश्यक है...। उनकी केवल आवाज ही रोगिणी के लिए दवाई बन जाएगी।'

'मैं—मैं अभी उसे बुलाकर लाता हूं।'

सेठ अग्रवाल तेजी से बाहर निकलकर कार में आ बैठे और उनकी कार सड़क पर दौड़ने लगी।

☐ दलजीत घर में दाखिल हुआ तो वह कुछ खोया-खोया और उदास था...उसके दिल पर एक अजीब-सा न समझ में आने वाला बोझ था। वह घर में आया तो नलिनी ने उसका चेहरा देखकर चौंक कर कहा—

'क्या बात है भैया...तुम्हारी तबियत कैसी है ?'

'ठीक है—'दलजीत ने धीरे से कहा।

'और भाभी कहां है ?'

'पता नहीं...।'

'भैया...रोज तो भाभी तुम्हारे पीछे ही आती हैं।'

'आज नहीं आई होगी।'

नलिनी ध्यान से दलजीत की सूरत देखती रही...दलजीत ने नजरें बचाने का प्रयत्न करते हुए कहा।

'जल्दी से खाना निकाल दे—मुझे भूख लग रही है।'

फिर वह हाथ मुंह धोने बैठ गया। जब वह हाथ मुंह धो चुका तो नलिनी ने खाना पटरे पर रख दिया था—वह ध्यान से दलजीत को देखकर बोली—

'भैया...एक बात बताओगे ?'

'हां—पूछो।'

'आज कोई न कोई असाधा[illegible] हुई है।'

'नहीं तो—।'

'फिर तुम उदास क्यों हो ?'

'कुछ भी नहीं...।'

'कहीं भाभी से झगड़ा तो [illegible] लिया तुमने ?'

मां जल्दी से उठकर बैठ गई [illegible] जीत की ओर देखकर बोलीं—

'दलजीत बेटा...सच-सच ब[illegible] तेरा झगड़ा तो नहीं हुआ उससे ?

'नहीं मां—मेरा झगड़ा नहीं हु[illegible]

'फिर क्या बात है—बहू [illegible] नहीं ?'

'वह...वह मां...।'

'तुझे मेरी सौगंध भैया...[illegible] बता दे।'

दलजीत ने ठंडी सांस ली औ[illegible] घटना सुना दी। मां और नलिनी [illegible] कर खड़ी हो गईं—मां ने कहा—

'इतनी बात हो गई...और तू [illegible] भी नहीं रहा।'

'बताकर करता भी क्या ?'

'अरे बेटा...वह हमारी बहू है[illegible]

'मां...मैं तुम्हें कैसे समझाऊं[illegible] तुम्हारी बहू नहीं है।'

'तेरे न कहने से हमारा रिश्[illegible] टूट जाएगा...चल...जल्दी से हमें [illegible] लेकर चल।'

'हाँ भैया...जल्दी से हमें हस्[illegible] चलो।'

'तुम लोगों को जाना है [illegible] जाओ—मैं नहीं जाऊंगा।'

'बेटे...तुझे क्या हो गया [illegible] हस्पताल में है...और तू जाएगा भी [illegible]

'मां...' दलजीत गुस्से में ख[illegible] हुआ बोला, 'मैं तुम्हें कैसे समझ[illegible] मोनिका इस घर की बहू नहीं बन स[illegible] नहीं बन सकती...।'

'मगर क्यों नहीं बन सकती ?'

'मां...आज तुम मेरी जबान [illegible] वाना चाहती हो तो सुनो...क्या [illegible] लड़की को अपनी बहू स्वीकार क[illegible] तैयार हो जिसने केवल मेरी नौकरी [illegible] करने के लिए प्रोफेसर उपाध्याय [illegible] करवा दिया जो मेरे पिता समान थे—खोकर मैंने दूसरी बार अपने आपको [illegible] अनुभव किया।'

क्र[illegible]

० असलम दिलकस, फेमस
र कतलस मोड़, १६ वर्ष,
-मित्रता करना, नावल
कर मन को बहलाना,
ना।

अशोक कुमार, डब्ल्यू० जैड० सी० बी० १६/२, हरि नगर, घण्टा घर नई दिल्ली-६४, १४ वर्ष, बे-टिकट यात्रा करना।

सूर्य प्रकाश वर्मा, ५७ बड़ा मोई वाड़ा उदयपुर (राज०), १५ वर्ष, एक दूसरे से जान-पहिचान करना, संगीत व कविता लिखना।

मुनिल सच्चर, १२५-ए/५५४, गोविन्द नगर, कानपुर, १५ वर्ष, पैसा कमाना, पढ़ना, दूसरों की मदद करना और खेल में रुचि रखना।

दीपक जैन, 'खिलाड़ी' द्वारा श्री जयचन्द जैन, स्योहारा, बिजनौर (यू० पी०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट प्लेयरों के फोटो एकत्र करना।

जहांगीर इब्राहीम, ४६, मोहम्मद अली रोड, तीसरा माला बम्बई-३, २४ वर्ष, बिजनेस करना और खूब धन कमाना।

शिव विनोद सिंह, ३८२ इन्ट एण्ड एफ० एस० कम्पनी, मार्फत ५६ ए० पी० ओ० बरेली, १८ वर्ष, वायत्र एकत्र करना, पढ़ना।

अहमद खां, ३०१०,
पाड, दरियापुर, अहमदा-
, १७ वर्ष, किताबें पढ़ना,
का में नाम छपवाना,
से रहना।

रोजी चौधरी द्वारा डाक्टर लाल, ७७१८ ए/५, राजपुरा कालोनी, पटियाला, १५ वर्ष, टिकटें इकट्ठी करना, साईकल चलाना।

आनन्द सिंह मैनवाल, नं० ६ कुशक रोड, नई दिल्ली, २१ वर्ष, प्रेम-पत्र लिखना, पानी में तैरना, सवेरे उठकर दौड़ लगाना।

प्रेम सागर सरोवर ग/५०४, सदर बाजार, करनाल, (हरियाणा), २६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दोस्ती निभाना, दूसरों के साथ भलाई करना।

विजय परिहार, ए/५११ सदर बाजार, करनाल (हरियाणा), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दूसरों को बेवकूफ बनाना, बैडमिन्टन खेलना।

अमनिन्द्र जीत सिंह, २६३ गोविन्दपुरी, कंकर खेड़ा मेरठ कैंट, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना, पढ़ना तथा घूमना।

विजय कुमार जायसवाल, बाई साहब दरवाजा गंगापुर, भीलवाड़ा (राजस्थान), १४ वर्ष, पढ़ना, बच्चों के साथ खूब खेलना।

ी मल्होत्रा, ब्लाक नं० १
न नम्बर ८/२, १९ वर्ष,
मित्रता करना, डाक
ट संग्रह, क्लब में फोटो
ा छपवाना।

राजीव ग्रोवर, ६२७५, बाड़ा हिन्दू राव, दिल्ली, १५ वर्ष, बच्चों से प्यार करना, पढ़ना, शरारत करना, दूसरों से झगड़ा करना।

हरिओम शर्मा 'शाद' द्वारा श्री वेद प्रकाश शर्मा बनबटा गंज, मुरादाबाद, १८ वर्ष, कविता लिखना, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना।

सन्दीप कुमार मदान, मकान नम्बर ७४, देवी मंदिर कालोनी, पानीपत (हरियाणा), १७ वर्ष, फर्माइश भेजना, खेलना।

भगवती लाल जैन, फलेजीया कल्याणपुर, जिला उदयपुर, (राजस्थान), २१ वर्ष, पढ़ना-लिखना, बन्दरों को चिढ़ाना, स्कूटर सवारी करना।

चन्द्र मोहन अरोड़ा, ६/७१ गीता कालोनी, दिल्ली, १६ वर्ष, घूमना-फिरना, फिल्म देखना, भलाई करना, सबसे खुश रहना।

अनिल कुमार कौशल, खरड़ जिला रूपनगर, (पंजाब), २० वर्ष, क्रिकेट खेलना, हंसना तथा दूसरों को खूब हंसाना।

किशोर सोनी, राव राजा
सिंह जी की हवेली, मोती
, जोधपुर (राजस्थान),
वर्ष, रेडियो सुनना,
करना।

अशोक कुमार गरचे, मकान नम्बर ८८१०/५, [illegible] शहर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पत्रों का [illegible] में जल्दी देना।

दयाल सिंह मेहता, गांव व पोस्ट मलोट, जिला फरीदकोट १६ वर्ष, मित्रता करना, पेपर पढ़ना, दूसरों को सही करना।

अनिल कटियार, (अभीयान्त्रिकी स्नातक) द्वारा डा० बी० एस० कटियार, ६/२५० भौलेपुर, फतेहगढ़ (उ० प्र०), २३ वर्ष, पत्रिकाएं पढ़ना।

अब्दुल रजाक खतरी, ११६, अली उमर स्ट्रीट, बम्बई-३ २५ वर्ष, कपड़ों की रंगाई करना, सभी से दोस्ती करना तथा मेहनत करना।

सोहन लाल, प्लाट नम्बर १५ वार्ड नम्बर ७, पानीपत (हरियाणा), १८ वर्ष, नावल पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, भला बनना।

सरदार रणजीत सिंह, मु० आम प्याडा टोली, अपर बाजार, जिला रांची, २५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फर्माइश भेजना।

कुमार विज, ८८,
बिल्डिंग ताबा काटा,
२५ वर्ष, लड़कों से
करना, आवारा बन-
ना।

मुजफ्फर अली, चितरंजन भवन ६२६/४५६, २१ वर्ष, फिल्म देखना, नाटक खेलना, रेडियो सुनना, टी० वी० पर प्रोग्राम देखना।

रमेशचन्द्र वर्मा, १६१ कोट, स्ट्रीट अमरोहा, (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रिकार्ड सुनना, अच्छा बनने की कोशिश करना।

नरिन्द्र कुमार बासल, ५४७-आर० माडल टाउन लुधियाना (पंजाब), १९ वर्ष, साहित्य पढ़ना, पत्रों के उत्तर जरूर देना।

जसबीर सिंह ई० सी० सिटी रेलवे कालोनी, एन० ई० रेलवे क्वाटर नं० एल/७ डी० बरेली सिटी, २५ वर्ष, चुटकले सुनना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

पता ____________________

आयु ________ शौक ________

नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक बिश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२२ मई से २८ मई ७८ तक

मेष : विगत समय में किये कामों के परिणाम मिलने लगेंगे और अच्छी बुरी दोनों प्रकार की घटनाएं होती रहेंगी. व्यापार में उन्नति परन्तु आमदनी पहले समान ही होगी, घरेलू हालात ठीक चलेंगे ।

वृष : इस सप्ताह के दौरान आपको अपने कामों में सफलता प्राप्त करने के लिए दौड़-धूप काफी करनी पड़ेगी, लाभ अच्छा होगा परन्तु मिलेगा कुछ देरी से ही, किसी प्रियजन से मिलाप होगा ।

मिथुन : यह सप्ताह आपके लिए विशेष अच्छा नहीं कहा जा सकता, छोटे-छोटे कारणों से मन उच्चाट रहेगा, घरेलू चिन्ता भी बनी रहेगी, कारोबार से लाभ ठीक समय पर मिलता रहेगा ।

कर्क : इन दिनों व्यर्थ के झंझटों से मन को चिन्ता लगी रहेगी, जल्दबाजी में कोई भी काम न करें वरना बाद में पछताना पड़ेगा, नातेदारों से मेल जोल एवं सहयोग भी मिलेगा, व्यय बढ़ेगा ।

सिंह : व्यापार में उन्नति या कोई नया साधन बन जावेगा, आय में वृद्धि होगी, कुछ अधूरे काम पूरे होने लगेंगे, सप्ताह अच्छा रहेगा, सरकारी काम हो तो उसमें सफलता मिल जावेगी ।

कन्या : यह सप्ताह काफी अच्छा रहेगा, परन्तु लाभ की प्राप्ति कठोर परिश्रम करने पर ही होगी, धार्मिक कामों में भी रुचि बनेगी, अफसरों से मेल जोल, यात्रा भी सफल रहेगी ।

तुला : इस सप्ताह में शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, शारीरिक कष्ट तथा घरेलू परेशानी भी बनी रहेगी, व्यापार की स्थिति संतोषजनक रहेगी और लाभ भी अच्छा होता रहेगा ।

वृश्चिक : कोई दिलचस्प कार्यक्रम तय होगा, जिस पर खर्च तो काफी करना पड़ेगा परन्तु समय भी अच्छा व्यतीत होगा, मित्रों एवं रिश्तेदारों से मेल-जोल रहेगा, यात्रा की आशा है ।

धनु : संभव है कि यह सप्ताह आपकी आशाओं के विपरीत चले किसी-किसी समय मानसिक परेशानी काफी रहेगी, व्यय बढ़ेगा जिसके कारण आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा ।

मकर : इन दिनों विगत समय में किए कामों के शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, आमदनी अच्छी होगी, परन्तु व्यय भी कम न होगा, कोई विशेष समाचार मिलेगा, कामों में सफलता मिलेगी ।

कुम्भ : सोशल कामों में दिलचस्पी रहेगी और सभा समाज में मान प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, व्यापार की स्थिति से संतोष और लाभ भी अच्छा होता रहेगा, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी बढ़ेगी ।

मीन : मित्रों के सहयोग से साहस बढ़ेगा, कारोबार से लाभ पहले समान ही होता रहेगा, नई योजना पर अब विचार करें— अमल नहीं वरना हानि हो सकती है, यात्रा में सुख मिलेगा ।

फिल्मी चित्र

त्रिलोक कपूर अमरनाथ और अनंत
फिल्म गंगा

रविराज और मीना टी॰ 'तीन चेहरे' में

किशोर कुमार
अहमद एक
हैं

शैलेन्द्र और
बिन्दु 'रैगि